पी. एण्ड एस. बैंक

राजभाषा अंकुर

सितंबर 2021

ੴ ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫਤਹਿ॥
पंजाब एण्ड सिंध बैंक
Punjab & Sind Bank
ਪੰਜਾਬ ਐਂਡ ਸਿੰਧ ਬੈਂਕ
(भारत सरकार का उपक्रम / A Govt. of India Undertaking)
राजभाषा विभाग

जयश्री एम.जी.
उप महानिदेश
Jayasree M.G.
Deputy Director General

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
वित्तीय सेवाएँ विभाग
वित्त मंत्रालय
जीवन दीप भवन, तीसरी मंजिल
१०, संसद मार्ग, नई दिल्ली–११०००१
GOVERNMENT OF INDIA
DEPARTMENT OF FINANCIAL SERVICES
MINISTRY OF FINANCE
JEEVAN DEEP BUILDING, 3RD FLOOR,
10, SANSAD MARG,
NEW DELHI-110001
TELE : +91-11-23362144
E-mail : jayasree.mg@nic.in
Website : www.financialservices.gov.in

अ. शा. पत्र संख्या 13014/12/2021-हिंदी **दिनांक 29-09-2021**

आदरणीय श्री कृष्णन जी

मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हो रही है कि विज्ञान भवन, नई दिल्ली में 14 सितम्बर, 2021 को आयोजित हिंदी दिवस समारोह में पंजाब एंड सिंध बैंक को राष्ट्रीयकृत बैंक 'क' क्षेत्र की श्रेणी में राजभाषा हिंदी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु पुरस्कार वर्ष 2019-20 के लिए **'राजभाषा कीर्ति द्वितीय पुरस्कार'** प्राप्त हुआ है।

मैं पंजाब एंड सिंध बैंक के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों और विशेष रूप से पंजाब एंड सिंध बैंक के राजभाषा विभाग को वित्तीय सेवाएं विभाग की और से बहुत-बहुत बधाई एवंशुभकामनाएं देती हूं और कामना करती हूं कि पंजाब एंड सिंध बैंक भविष्य में भी अपने कारोबार में निरन्तर वृद्धि के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में भी अपना उत्कृष्ट स्थान बनाए रखेगा।

सादर

शुभेच्छु

जयश्री

(जयश्री एम.जी.)

श्री एस. कृष्णन,
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी,
पंजाब एंड सिंध बैंक, नई दिल्ली

पंजाब एण्ड सिंध बैंक

प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग की हिंदी पत्रिका

राजभाषा अंकुर

(केवल आंतरिक वितरण हेतु)

बैंक हाउस, प्रथम तल, 21, राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली – 110008

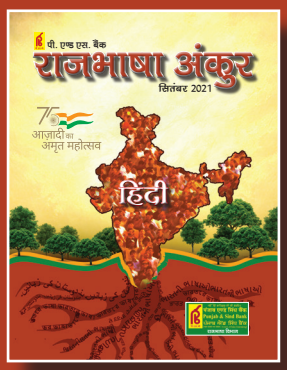

सितंबर 2021

मुख्य संरक्षक

श्री एस. कृष्णन

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

संरक्षक

श्री कोल्लेगाल वी राघवेन्द्र

कार्यकारी निदेशक

मुख्य संपादक

श्री कामेश सेठी

महाप्रबंधक सह मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक एवं प्रकाशक

श्री निखिल शर्मा

वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल

श्री देवेन्द्र कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

श्रीमती मोनिका गुप्ता, प्रबंधक (राजभाषा)

श्री मोहन लाल, राजभाषा अधिकारी

ई-मेल : hindipatrika@psb.co.in

पंजीकरण सं.: एफ.2(25) प्रैस. 91

(पत्रिका प्रकाशन तिथि : 31/10/2021)

'राजभाषा अंकुर' में प्रकाशित सामग्री में दिए गए विचार, संबंधित लेखकों के अपने हैं। पंजाब एण्ड सिंध बैंक का प्रकाशित विचारों से सहमत होना ज़रूरी नहीं है। सामग्री की मौलिकता एवं कॉपी राइट अधिकारों के प्रति भी लेखक स्वयं उत्तरदायी है।

मुद्रक : जैना ऑफसेट प्रिंटर्स

ए 33/2, साइट–4, साहिबाबाद इंडस्ट्रीयल एरिया,

गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश

फोन नं. : 98112 69844

ई-मेल: jainaoffsetprinters@gmail.com

विषय सूची

क्र. सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
1.	संपादक मंडल/विषय-सूची	1
2.	आपकी कलम से	2
3.	संपादकीय	3
4.	हिंदी दिवस 2021 के अवसर पर माननीय गृहमंत्री जी का संदेश	4-6
5.	हम हिंदुस्तानी	7-8
6.	ग्राहक के मुख से	9
7.	खेल-खेल में हिंदी	10-13
8.	नराकास उपलब्धियाँ	14-15
9.	प्रधान कार्यालय में हिंदी दिवस समारोह 2021	16-17
10	मैं समय बोल रहा हूँ!	18-19
11.	हिंदी कार्यशाला का आयोजन	20-21
12.	राजभाषा प्रतिज्ञा	21
13.	राजभाषा कीर्ति पुरस्कार	22-23
14.	अंतर अंचल राजभाषा शील्ड	24
15.	ज़रा सोचिए!	25
16.	बैंक की लाभप्रदता में भाषा	26-27
17.	कहानी – एहसास	28-29
18.	कार्टून कोना/पहले मुझे जीने तो दो	29
19.	राजभाषा संगोष्ठी	30-31
20.	काव्य-मंजूषा	32-33
21.	अंचल कार्यलयों में हिंदी पखवाड़ा 2021	34-35
22.	बैड बैंक की स्थापना के बाद बैंकों पर उसके पड़ने वाले प्रभाव	36-37
23.	मूल बांग्ला लेख- हाइली सस्पीशियस	38-40
24.	मूल बांग्ला लेख का हिंदी अनुवाद	41-42
25.	वैश्विक तापन और ग्रीनहाउस प्रभाव	43
26.	विमोचन/रचनाकारों से निवेदन	44

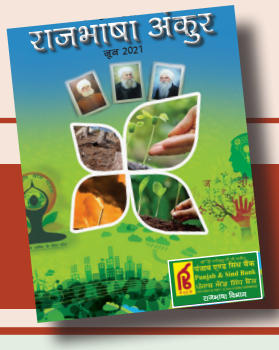

आपकी कलम से

महोदय,

अपने बैंक की गृह पत्रिका राजभाषा अंकुर का जून, 2021 अंक प्राप्त हुआ। सर्वप्रथम इसके लिए धन्यवाद! राजभाषा अंकुर के प्रति आकर्षण ऐसा रहा है कि जैसे ही यह मुझे प्राप्त होती है एक बार में ही इसे पूरा पढ़ने का प्रयास करता हूँ। इस बार भी 'अंकुर' बेहद स्तरीय और पठनीय लगी। राजभाषा अंकुर का जून अंक ज्ञान, रचनात्मकता और रोचकता का अद्भुत संगम बन पड़ा है। श्री राजेश श्रीवास्तव का अनुवाद पर लेख– ' सहज एवं सरल अनुवाद की बारीकियां', श्री वी.एस. मिश्रा का लेख ' पंजाब एण्ड सिंध बैंक–अहर्निशं सेवामहे' तथा सुश्री पूजा अग्रवाल का 'विश्व पर्यावरण दिवस' पर लेख विशेष रूप से उल्लेखनीय है। कहानी– 'गुस्सा नियंत्रण चाबी' तथा काव्य मंजूषा की सभी कविताएं मानव संवेदना को गहरे स्तर पर झकझोरती है। बैंकिंग संबंधी लेख और राजभाषा हिंदी के संबंध में प्रकाशित लेख भी पत्रिका के स्तर के अनुरूप ही हैं। पत्रिका की साज– सज्जा, प्रिंट आकर्षक है।

अतः राजभाषा अंकुर का संपादक मंडल ऐसे पठनीय, रोचक व ज्ञानवर्धक पत्रिका के प्रकाशन के लिए प्रशंसा का पात्र हैं। धन्यवाद!

चमन लाल, आंचलिक प्रबंधक, अंचल कार्यालयः दिल्ली–I

महोदय,

मुझे खुशी हो रही है कि प्रधान कार्यालय के राजभाषा विभाग द्वारा "राजभाषा अंकुर" का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका का प्रकाशन किसी भी संगठन के कर्मियों को अपनी सृजनात्मक प्रतिभा को निखारने का एक सशक्त माध्यम होता है जो राजभाषा प्रचार–प्रसार को गति प्रदान करता है।

हिंदी एक उदार भाषा है जिसने अंग्रेजी और अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दों को सहजता से अपनाया है, हिंदी की प्रवाहमयता उसे जीवंत बनाती है। तेजी से बदल रही सूचना प्रौद्योगिकी ने भाषाओं को सीखने और उनके प्रयोग को आसान बना दिया है। अब आवश्यकता सिर्फ इस बात की है कि हम सब इनके माध्यम से अपने दैनिक कामकाज में हिंदी का प्रयोग बढ़ाएं।

मैं "राजभाषा अंकुर" के प्रत्येक अंक का पठन अवश्य करता हूँ। इस पत्रिका की समस्त सामग्री मनमोहक है। जून 2021 के अंक में प्रकाशित "सहज एवं सरल अनुवाद की बारीकियाँ", "पंजाब एण्ड सिंध बैंक – अहर्निशं सेवामहे" लेख अत्यंत प्रवाहमय व ज्ञान वर्धक रहे एवं पत्रिका के "काव्य मंजूषा" ने तो पत्रिका में गागर में सागर भरने का काम कर दिया है। पंजाब एण्ड सिंध बैंक में प्रेरणा और प्रोत्साहन से राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने और उसके प्रचार–प्रसार हेतु इस पत्रिका का योगदान अवर्णनीय है।

समिन्दर सिंह, आंचलिक प्रबंधक, अंचल कार्यालयः बठिंडा

महोदय,

बैंक की तिमाही हिंदी पत्रिका "राजभाषा अंकुर" का जून 2021 अंक प्राप्त हुआ, जिसके लिए आपका कोटि–कोटि धन्यवाद! पत्रिका में प्रकाशित सामग्री हमेशा की तरह बहुत ही आकर्षक एवं प्रेरणादायक लगी। पत्रिका में प्रकाशित विषयों जैसे सहज एवं सरल अनुवाद की बारीकियाँ, एक पार्क ऐसा भी, कड़वा सच, कोविड विशेष ऋण योजना का महत्व, विश्व पर्यावरण दिवस, अपनी हिंदी, प्यारा साडा बैंक–पौधा सदाबहार, जरा सोचिए आदि रचनाओं ने हृदय में विशेष स्थान बनाया इसके अतिरिक्त काव्य–मंजूषा के अंतर्गत प्रकाशित कविताएं बहुत ही सुंदर लगीं।

पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्रों के माध्यम से बैंक के प्रधान कार्यालय एवं विभिन्न अंचल कार्यालयों में हो रही राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित विभिन्न गतिविधियों के बारे में भी जानकारी मिलती है। मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन एवं इस पत्रिका के माध्यम से बैंक को प्राप्त विभिन्न उपलब्धियों की जानकारियों हेतु पत्रिका के संपादक मंडल/प्रकाशक को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

रशपाल सिंह, आंचलिक प्रबंधक, अंचल कार्यालयः गुरदासपुर

संपादकीय

प्रिय पाठकगण,

राजभाषा अंकुर का 'सितंबर–2021' अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है। गौरव की बात है हमारे बैंक को 2019–20 के दौरान राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए राष्ट्रीयकृत बैंकों एवं वित्तीय संस्थानों की श्रेणी के अंतर्गत, 14 सितंबर 2021 को विज्ञान भवन में आयोजित हिंदी दिवस समारोह–2021 में राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (द्वितीय) प्रदान किया गया। यह पुरस्कार बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय ने केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री निशिथ प्रामाणिक के कर कमलों से प्राप्त किया। कीर्ति पुरस्कार, बैंक के सभी कार्मिकों की मेहनत व प्रयास का ही प्रतिफल है।

प्रत्येक वर्ष की भांति हमारे बैंक के प्रधान कार्यालय, अंचल कार्यालयों तथा शाखाओं में हिंदी पखवाड़ा और हिंदी दिवस मनाया गया। राजभाषा की दृष्टि से सितंबर माह हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। माह के दौरान प्रधान कार्यालय में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में कार्मिकों की सहभागिता प्रशंसनीय रही। राजभाषा कार्यान्वयन के मूल मंत्र "प्रेरणा एवं प्रोत्साहन" पर कार्य करते हुए विभिन्न प्रतियोगिता के विजेताओं तथा वित्तीय वर्ष 2020–21 के दौरान उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए बैंक के विभागों तथा अंचल कार्यालयों को पुरस्कृत किया गया।

पत्रिका के इस अंक में हिंदी दिवस–2021 के अवसर पर माननीय गृह मंत्री का संदेश, राजभाषा से संबंधित लेख व अन्य लेखों को स्थान दिया गया है। हमेशा की तरह विशेष स्तंभ हिंदी रूपांतर सहित मूल क्षेत्रीय भाषा के लेख, कार्टून कोना तथा जरा सोचिए यथावत अपनी जगह बनाए हुए हैं। आशा है पत्रिका का यह अंक आपको पसंद आएगा। कृपया पत्रिका के विषय में अपने विचारों व प्रतिक्रिया से हमें अवगत कराएं ताकि पत्रिका में अपेक्षित सुधार हो सके।

(कामेश सेठी)
महाप्रबंधक सह
मुख्य राजभाषा अधिकारी

हिंदी दिवस 2021 के अवसर पर माननीय गृहमंत्री जी का संदेश

अमित शाह
गृह और सहकारिता मंत्री
भारत सरकार
AMIT SHAH
HOME AND COOPERATION MINISTER
GOVERNMENT OF INDIA

सत्यमेव जयते

प्यारे देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

भाषा मनोभाव व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है। किसी भी देश का समग्र विकास तभी संभव है जब उसके निवासी अपनी मातृभाषा में चिंतन एवं लेखन करें। मातृभाषा ही ज्ञान और अभिव्यक्ति का सबसे अच्छा माध्यम है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश के प्राचीन ज्ञान में ही आज के युग के अनेक जटिल प्रश्नों के उत्तर छुपे हैं और 21वीं सदी के भारत के विकास में इस ज्ञान का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस ज्ञान का उचित दोहन मातृभाषा के विकास के बिना संभव नहीं है। मातृभाषा में वह क्षमता है जो ज्ञान, गौरव और स्वाभिमान भी प्रदान करती है।

आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने कहा है:

"मातृभाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है तथा अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना असंभव है।"

हिंदी का उद्भव एवं विकास भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हुआ है। मूलत: इन सभी भाषाओं में भारतीय संस्कृति की मिट्टी की खुशबू आती है। यह आवश्यक है कि क्षेत्रीय भाषाओं का संरक्षण, संवर्धन और विकास किया जाए तथा अनुवाद के माध्यम से इनके बीच एक सेतु बनाया जाए ताकि भारतीय साहित्य समृद्ध हो सके। इससे भारतीय भाषाओं में आपसी सामंजस्य, सहिष्णुता, सम्मान और सौहार्द भी बढ़ेगा तथा हमें एक-दूसरे का साहित्य पढ़ने का अवसर भी मिलेगा एवं देश की भाषाई एवं राष्ट्रीय एकता और मजबूत होगी। देश की सभी भाषाओं की आपसी सहभागिता, उनका स्वतंत्र विकास और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग देश में शान्ति, परस्पर सद्भावना एवं प्रगति का मुख्य आधार बन सकता है। तिरुवल्लूवर और सुब्रमण्यम भारती जैसे तमिल के महान कवियों की साहित्यिक रचनाएं कालजयी हैं, जिन पर सभी देशवासियो को गौरव है।

इसी प्रकार बांग्ला के रवींद्रनाथ टैगोर हों, शरतचंद्र हों या महाश्वेता देवी अथवा पंजाब की अमृता प्रीतम, हम इनका साहित्य भी उसी प्रकार हिंदी में पढ़ते हैं, जिस प्रकार हम हिंदी के प्रेमचंद का साहित्य पढ़ते हैं। वास्तव में, हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाएं हमें विरासत में मिली हैं तथा इस धरोहर की रक्षा एवं संवर्धन करना हमारा महत्वपूर्ण दायित्व भी है और वर्तमान सरकार इसी दिशा में प्रतिबद्ध है। दशकों के बाद देश के माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में एक 'नई शिक्षा नीति' हमें मिली है, जिसका उद्देश्य मातृभाषा में शिक्षा उपलब्ध कराना तथा सभी भारतीय भाषाओं को पल्लवित और पुष्पित करना है।

विभिन्न भाषाएं और संस्कृतियां भारत की पहचान हैं, सभी भाषाओं का समृद्ध इतिहास है, समृद्ध साहित्य है और बड़ी संख्या में बोलने वाले भी मौजूद हैं किंतु पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने का काम हिंदी ने बखूबी किया है। देश की आजादी की लड़ाई में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता सेनानियों को एक करने का काम उस जमाने में हिंदी भाषा ने किया था। इस कार्य में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी, उन्होंने कहा था,

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।
-महात्मा गाँधी

"जो भाषा भारत के दिलों पर राज करती है, वह भाषा हिंदी है।"

भाइयों, बहनों ! वैज्ञानिकों ने माना है कि हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है, हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना अत्यंत सरल है। हिंदी में जैसा बोला जाता है, वैसे ही लिखा जाता है और हिंदी की इन्हीं विशेषताओं और लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने गंभीर विचार-विमर्श के बाद आपसी सहमति से हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा हिंदी संबंधित संवैधानिक प्रावधानों को आज के ही दिन यानि 14 सितंबर 1949 को अंगीकार किया। इसी उपलक्ष में हम प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।

प्यारे देशवासियो! जैसा कि आप जानते हैं कोरोना के कारण भारत ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में गंभीर संकट आ गया और सभी देशों ने इस समस्या से निदान पाने के लिए हर संभव प्रयास किए। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत में कोरोना की लड़ाई अत्यंत सफलतापूर्वक लड़ी गई। इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों और भारत की 130 करोड़ की जनता ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में इस लड़ाई से लड़ने में हमें अनेक विकसित देशों से बेहतर सफलता मिली और यदि जनसंख्या के अनुपात से देखें तो हम पूरी दुनिया में सबसे कम मृत्यु दर के साथ महामारी से हुई हानि को कम रखने में सफल हुए हैं। इस लड़ाई में माननीय प्रधानमंत्री जी ने देश की जनता के हौसले को बढ़ाने के लिए समय-समय पर जनता की भाषा में ही राष्ट्र को संबोधित किया ताकि देश के अधिक से अधिक लोगों तक प्रभावी ढंग से बात पहुंच सके।

कोरोना काल की विषम परिस्थितियों में राजभाषा संबंधी संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन में राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी के आह्वान से प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने स्मृति आधारित कंप्यूटर सॉफ्टवेयर स्वदेशी टूल 'कंठस्थ' को अधिक लोकप्रिय बनाया। विभिन्न सरकारी संगठनों के हिंदी अधिकारियों को ई-प्रशिक्षण देकर प्रोत्साहित भी किया है। इसी प्रकार स्वयं हिंदी भाषा सीखने के लिए बनाए गए 'लीला हिंदी ऐप',- *लर्निंग इंडियन लैंग्वेजेज थ्रू आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस* का भी प्रचार किया जा रहा है। इस ऐप के माध्यम से अंग्रेजी के अलावा 14 अन्य भारतीय भाषाओं, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, बांग्ला, असमिया, मणिपुरी, मराठी, उड़िया, पंजाबी, नेपाली, कश्मीरी, गुजराती एवं बोडो से स्वयं हिंदी सीखी जा सकती है।

कोरोना महामारी में भी राजभाषा संबंधी कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों/ विभागों/ उपक्रमों आदि के द्वारा प्रकाशित की जाने वाली गृह पत्रिकाओं के लिए ई-पत्रिका पुस्तकालय प्लेटफार्म उपलब्ध कराया, जिसके माध्यम से देश-विदेश में कहीं भी बैठकर केंद्र सरकार के संस्थानों की गृह-पत्रिकाओं को पढ़कर उसका लाभ उठाया जा सकता है। वर्तमान में राजभाषा विभाग ने इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से बैठकें एवं निरीक्षण कर राजभाषा संवर्धन में एक नई पहल की है। ई-महाशब्दकोश मोबाइल ऐप' तथा 'ई-सरल हिंदी वाक्यकोश मोबाइल ऐप' भी उपलब्ध कराए हैं, इनके प्रयोग से अधिकारियों को हिंदी में टिप्पणी लिखने में बहुत सुविधा हो रही है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की सुविचारित नीति है कि केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग प्रेरणा, प्रोत्साहन व सद्भावना से बढ़ाया जाए। माननीय प्रधानमंत्री जी के स्मृति विज्ञान संबंधी प्रेम और प्रयोग से प्रभावित होकर राजभाषा विभाग ने हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए बारह 'प्र' की रूपरेखा और रणनीति पर काम करना शुरू किया है, जिसमें महत्वपूर्ण स्तंभ हैं: प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, पुरस्कार, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास। राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न बैठकों में संबंधित कार्यालय के शीर्ष नेतृत्व को इन्हीं बारह 'प्र' की रणनीति के अनुसार कार्यालय के अधिक से अधिक कार्य को मूल रूप से सरल एवं सहज हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

हम सभी जानते हैं कि भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी स्वयं हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रति अनुराग रखते हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में दिए गए ओजस्वी संबोधन तथा देश-विदेश में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में किए गए संबोधन से सिर्फ देश ही नहीं बल्कि विदेश में

रहने वाले भारतीयों को भी बहुत गर्व होता है। प्रधानमंत्री जी द्वारा भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में स्थानीय लोगों को संबोधित करने का प्रयास भी क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने का एक सराहनीय और अनुकरणीय कदम है।

मुझे लगता है कि, जब हम आजादी के 75वें वर्ष में, अमृत पर्व में, प्रवेश कर रहे हैं, तो हमें इस वर्ष राष्ट्रकार्यों को हाथ में लेना चाहिए। महात्मा गांधी जी ने राजभाषा को राष्ट्रीयता के साथ जोड़ा था। हमारे आजादी के आंदोलन के तीन स्तंभ थे, स्वभाषा, स्वदेशी और स्वराज। स्वराज की कल्पना, स्वदेशी के संस्कार से उत्पन्न हुई स्वभाषा। आजादी के आंदोलन की यदि कोई सशक्त नींव थी, तो वह स्वभाषा ही थी। इस स्वभाषा से स्वदेशी के संस्कार ने जन्म लिया, स्वराज की कल्पना मिली, जिसने 15 अगस्त 1947 को आजादी दिलाई। इस आजादी के आंदोलन में हमारी स्वभाषाओं में राजभाषा और स्थानीय भाषाओं की भूमिका पर जो अलग-अलग साहित्य की रचनाएँ हुई हैं, इसका एक संग्रह कर देश के सामने रखना चाहिए ताकि नई पीढ़ी को स्वभाषा का महत्व पता चल सके।

दूसरा विषय जो मेरे मन में है, क्षेत्रीय इतिहास को राजभाषा में ढंग से अनुवादित करना चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों की गौरवशाली संस्कृति और उन क्षेत्रों के महानायकों के इतिहास का राजभाषा में सही भाव के साथ अनुवाद होना चाहिए और ये अनुवादित ग्रंथ देश के विभिन्न ग्रंथालयों में उपलब्ध भी होने चाहिए। मैं मानता हूं कि आजादी के 75वें साल में मनाए जा रहे अमृत महोत्सव पर राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए हमारा बहुत बड़ा काम होगा।

संविधान द्वारा दिए गए राजभाषा संबंधी दायित्वों के निर्वहन की दिशा में माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज मूल रूप से हिंदी में किया जा रहा है। गृह मंत्रालय में सभी फाइलें हिंदी में प्रस्तुत की जाती हैं, क्योंकि मेरा मानना है कि हिंदी में कार्य कर हम अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन तो कर ही रहे हैं, आम-जन तक सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों की जानकारी आम जनता की भाषा में देने का महत्वपूर्ण काम भी इसके साथ ही होता है।

आइए! हिंदी दिवस के इस पावन पर्व पर हम प्रतिज्ञा लें कि हम अपने राष्ट्रीय कर्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन करेंगे और अधिक से अधिक मूल कार्य हिंदी में कर संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

हिंदी दिवस के अवसर पर सभी देशवासियो को पुन: हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं, वंदे मातरम !

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2021

(अमित शाह)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

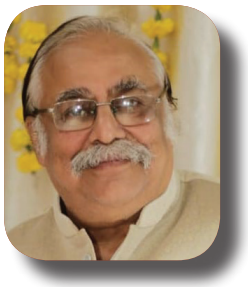

वी.एस. मिश्रा

हम हिंदुस्तानी

रिश्तों की अहमियत भारतीय सामाजिक परिवेश की विशिष्ट पहचान है। ये नहीं कि अंग्रेजी भाषा की तरह सारे रिश्ते दो शब्दों 'अंकल' और 'आन्टी' में समाहित हो जाये। दादा–दादी, ताऊ–ताई, चाचा–चाची, मामा–मामी, नाना–नानी, फूआ–फूफा, जीजी–जीजा कितने नाम हैं यह मात्र संज्ञा नहीं, अपितु हर नाम संबंधों को, परस्पर व्यवहार को भी परिभाषित करते हैं। दादा जी या फिर ताऊ जी परिवार की परंपरा और मूल्यों के ध्वजवाहक होते है और इनके साथ संबंध भी अनुशासन से नियंत्रित रहते हैं। साथ ही, परिवार के न्यायालय का आखरी अपील कोष्ठ। परिवार के बच्चे भी अपनी जिद पूरी करवाने के लिये परिवार के मुखिया मे नीहित अधिकार का प्रयोग करवा लेते हैं। चाचा–चाची से संबंध मस्ती और अनौपचारिकता से ओत–प्रोत और बच्चों की अजीबो–गरीब मांग के लिये वे अर्थ मंत्री भी होते हैं। मामा–मामी से दुलार और मनुहार का संबंध। फूफा जी से रिश्ता थोड़ा जटिल होता है। उन्हें परिवार से इतना आदर मिलता रहता है कि उन्हे इसकी आदत हो जाती है और वह सब पर हुकुम चलाते है। उनकी इस प्रवृत्ति के कारण बच्चे उनसे दूर ही रहते हैं। आशय यह है कि संबंधो की उष्णता उस रिश्ते के नाम से ही स्पष्ट हो जाता है। यह समृद्ध परंपरा पश्चिमी सभ्यता के लिये अबूझ ही होगा क्योकि उनकी परंपरा मे चीजों को विस्तारित करने की जगह संकुचित करने की रिवायत होती है। देखिये न एक शब्द 'सौरी' से ही विभिन्न मनोभावों को प्रकट कर दिया जाता है। हम बातूनी भारतीयो के लिए यह संक्षिप्तिकरण बडा असहनीय होता है। आप ही देखिये सड़क पर चलते हुये किसी से टकरा गये और सिर्फ 'सौरी' से समझौता हो जाये, यह हम भारतवासी कैसे सह सकते हैं। टक्कर हुई है तो इस विषय पर विचार होना चाहिए कि गलती किसकी थी और समग्र घटना को इसकी तार्किक परिणति से पूर्व ही 'सौरी' से समाप्त कर देना एक और गलती होगी लेकिन यहाँ भी अंग्रेजी अपने पैर घुसा कर बैठ जाती है। सड़क पर एक वाहन दूसरे से रगड़ खा गयी। दोनो वाहन स्वामी एक दूसरे से अंग्रेजी मे भिड़ गये। दोनों शब्दकोष से शब्दों को निकाल–निकाल कर बकने लगे। एक का भी वाक्य सरल वाक्य नहीं होता। सवाल टक्कर से अधिक इस विषय पर केन्द्रित हो जाता है कि दोनों मे किसका अंग्रेजी ज्ञान बेहतर है और नतीजा भुगतना पड़ता है सड़क जाम से। दूसरे प्रतीक्षा करते रहते हैं कि कब हमारे भाषावीर अपने वाहन को हटा कर उनको निकलने दे। अरे भाई जब अंग्रेजी मे इतने निष्णात हो तो 'सौरी' शब्द भी जानते होंगे लेकिन यहां दो संस्कृति

का घालमेल दोषी है। भारतीय हैं तो इतनी आसानी से युद्ध समाप्ति हो नही सकती और चूकि युद्ध की भाषा अंग्रेजी है तो जब तक निबंध पूरा न हो, जबान को लगाम कैसे दे। यह भारतीय और पाश्चात्य सभ्यता का घालमेल ही बड़ी परेशानी का कारण है। कुछ घरों मे बच्चों के हिंदी बोलने पर सख्त पाबंदी होती है। बच्चे ने 'स्पून' को चम्मच कह दिया और आफत। पानी को 'वाटर' और अचार को 'पिकल' नहीं बुलाया तो उनको भूखा–प्यासा रहना पड़ सकता है। कही हिंदी बोलने की बेअदबी अतिथियों के सामने कर दिया किसी बच्चे ने तो सजा मिलनी तय है। अब बच्चा 'शेक्सपियर' बने ना बने पर घर का स्वाभाविक सदस्य भी नहीं रह पाता।

भाषा और संस्कृति, कोई भी हो, समृद्ध ही होता है और व्यक्तित्व निर्माण के लिये आवश्यक भी। काल और स्थान के गणित से जो भेद संस्कृतियों में होते भी है, वह भौगोलिक, ऐतिहासिक, सामाजिक विकास के अलग–अलग सोपान के फलस्वरूप। इस साधारण बात को समझ लिया जाये तो किसी संस्कृति, भाषा को ओढ़ने की आवश्यकता ही नही पडेगी। आप बहुभाषाविद हैं अच्छी बात है। 'मातृवत परदारेषु' हमारी मान्यता है अर्थात् वह हम हर स्त्री को मातृवत समझे। अब अगर दूसरी संस्कृतियों को, भाषा को मातृवत समझा जाये तो ठीक मगर अपनी माता का तिरस्कार तो गलत ही है। माइकेल मधुसूदन दत्त अंग्रेजी के मूर्धन्य विद्वान थे पर उन्होने बंगला भाषा मे भी अपना साहित्यिक योगदान दिया। कविताएं अंग्रेजी में भी लिखी, बंगला में भी कविता, नाटक लिखे। पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय नरसिंह राव जी देशी व विदेशी कुल सत्रह भाषाओं के जानकार थे और दक्षिण भारतीय होने के बावजूद बहुत सुंदर और साफ हिंदी बोलते थे। ये उदाहरण स्पष्ट करते है कि आप की सांस्कृतिक समृद्धि को तभी समाहित किया जायेगा जब आप अपनी 'जननी' भाषा और संस्कृति का आदर करेंगे।

जमाना मिलावट का है पर मिलावट को नैतिक आचार नहीं मान सकते है। अन्न मे मिलावट प्राणघातक हो सकता है तो भाषा एवं संस्कृति में मिलावट अपनी ही विरासत के लिये घातक हो सकता है। यही वजह है कि आज की पीढ़ी एक ऐसे द्वंद में उलझ गई है कि वह किसे प्रगति माने। भौतिक उपलब्धियों को ही अपने विकास का मानदंड मानकर चलने को ही प्रगति मान लेने से तमाम सुविधाओं के उपभोग के बावजूद असंतुष्टि बनी रहती है। आवश्यकता है ऐसे सामाजिक मूल्यों को प्रोत्साहित करना जो आपको अपनी विरासत से प्यार करना सिखाये, अपनी भाषा की गरिमा समझाये और यह सिखलाये कि समाज में वही आदरित होता है जो रिश्तों की पूजी संभाल सकता है।

आप किसी भी भारतीय गाँव में जाइए। वहाँ एक–दूसरे का नाम पुकारने का प्रचलन नहीं होगा। मज़हब, जाति कोई भी हो, सब एक दूसरे को दादा, चाचा, काका, ताऊ कहते हैं। ऐसा नहीं कि उनके रिश्तों में हमेशा सब ठीक होता है पर समस्या को सुलझाने में इन संबोधन का बड़ा महत्व होता है। किसी को आप चाचा कहते है और उनसे मतभेद भी है पर चाचा, इस रिश्ते की गरिमा के लिए एक सीमा से अधिक मतभेद को नहीं ले जा सकते। प्रसिद्ध समाजशास्त्री टालकोट पारसन ने अपने सिद्धांत मे स्वीकार किया है कि सामाजिक संस्थाओं में प्रचलित मान्यताएं उस समाज के व्यक्ति के व्यवहार प्रणाली को नियंत्रित करता है। साथ ही सामाजिक मान्यताएं उदभृत होती हैं समाज की आवश्यकताओ के अनुसार। अर्थात् व्यक्ति समाज के प्रचलित व्यवहार पर और समाज, व्यक्ति या समूह के आचार पर निर्भर करता है। औपनिवेशिक शासन के पूर्व या उसके क्रमिक प्रसार के दौर में भी हमारी आर्थिक विवशताएं थी, भौतिक सुख–संसाधनों का अभाव था पर सामाजिक शाँति बनी रहती थी। परस्पर सहयोग, प्रेम, अनुशासन का महत्व निरक्षर लोग भी भली भांति समझते थे जबकि आज बड़े–बड़े विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चों को नैतिक शिक्षा, अनुशासन का पाठ पढ़ाने के बाद भी इन मूल्यों को स्थापित नही किया जा सका। आज के युवा में एक बेचैनी, उग्रता दिखती है, एक असंतोष दिखता है। वजह है जिन चीजों को अपनी विरासत में ही सीख लिया जाता था और जो चरित्र के साथ ही जुड़ जाता था, उस विरासत के प्रति तटस्थता जो चारित्रिक अवमूल्यन की भी वजह है। इसकी एक वजह है अंधानुकरण। अच्छी बातों का अनुकरण करने में कोई बुराई नहीं पर सिर्फ इसीलिये अंधानुकरण किया जाये कि वह हमसे बेहतर दिखता है। यह ईर्ष्या से उत्पन्न मनोभाव शाँति और प्रगति का कारण कैसे बनेगा?

आप प्रेमचंद जी का साहित्य पढ़िए, रोचक, उत्प्रेरक, मनोरंजक और साफगोई से मानव मनोविज्ञान का आंकलन। हर चरित्र आपको अपने आसपास का लगेगा। रेणु जी का साहित्य पढ़िए और भारतीय समाज के सरोकारों का साक्षात्कार कीजिए। ऐसा नहीं कि कुरीतियों को छिपाया गया या फिर मनुष्य की दुर्बलता को उजागर नहीं किया गया है पर इस तरह से कि पाठकों में उन दुर्बलता या कुरीतियों के प्रति घृणा पैदा हो और कथा से मनोरंजन के साथ अप्रत्यक्ष रूप से चारित्रिक सुधार भी होता रहे। यही हमारी सांस्कृतिक विशिष्टता है कि हमें जीवन संघर्ष के लिये तैयार करने मे हमारी लोक कथाएं, धर्मग्रंथ बड़ी भूमिका का निर्वहन करते हैं। अपनी विशेषताओं के प्रति आग्रह अंधानुकरण से नहीं अपितु अपनी धरोहर के साथ जुड़ने से होगा।

सेवानिवृत्त वरिष्ठ प्रबंधक

ग्राहक के मुख से

मुकुल कुमार

पंजाब एण्ड सिंध बैंक की साकची शाखा में पार्टनरशिप फर्म 'मेसर्स गणपति इंटरप्राइजेस' के नाम से हमारा बैंक खाता संचालित है। हमारी यह कंपनी टाटा स्टील प्लांट में वेंडर के रूप में कार्य करती है। कंपनी का मुख्य व्यावसाय टाटा स्टील, जमशेदपुर (झारखंड) के लिए मैकेनिकल मेंटनेंस कार्य करना तथा सिविल कार्य करना है। फर्म का कार्य मैं (मुकुल राय) तथा श्री सतीश कुमार, संयुक्त रूप से देखते हैं।

जब हमने अपनी शिक्षा पूरी की, वह ऐसा समय था जब लोग सरकारी नौकरी को अपना ध्येय मानते थे लेकिन हमने पहले से ही उद्यमकर्ता बनना तय कर रखा था। उद्यमकर्ता बनने की मन में प्रबल इच्छा थी लेकिन किसी भी कार्य को प्रारंभ करने के लिए आर्थिक पक्ष का मजबूत होना आवश्यक होता है। इसी उद्देश्य को साधने के लिए हम 2010 में पंजाब एण्ड सिंध बैंक की साकची, जमशेदपुर शाखा से जुड़े। यह वर्ष मेरे लिए स्मरणीय वर्ष है। तत्कालीन शाखा प्रबंधक श्री कामेश सेठी ने हमारी फर्म के लिए बिजनेस ऋण स्वीकृत किया। इसके बाद मुझे एहसास हुआ कि अब फर्म के ऊपर बैंक की मातृछाया है जो कभी भी आवश्यकता पड़ने पर हमारे साथ हैं। इसके अतिरिक्त बैंक ने हमें मशीनरी के लिए कॉमर्सियल वाहन ऋण भी स्वीकृत किया।

फर्म का व्यवसाय जब बढ़ा तो अन्य बैंकों की शाखाओं ने भी हमसे जुड़ने का आग्रह किया लेकिन मेरे व्यक्तिगत नजरिए तथा फर्म के विकास दोनों की दृष्टि में पंजाब एण्ड सिंध बैंक, सर्वोच्च प्राथमिकता में है। वर्तमान में शाखा से फर्म को सीसी लिमिट सुविधा दी गई है। हमारे कंपनी का टर्नओवर सालाना लगभग ₹40 करोड़ का है। इसके अतिरिक्त बैंक में हमारा चालू खाता भी है जिसमें लगभग ₹1.50 करोड़ का लेनदेन होता है। हमारी कंपनी में लगभग 100 कर्मचारी हैं और इन सभी कर्मचारियों का वेतन खाता पंजाब एण्ड सिंध बैंक की साकची शाखा में हैं।

फर्म से हटकर मेरा अपना व्यक्तिगत अनुभव भी बैंक के साथ मधुर रहा है। मेरे पूरे परिवार का खाता बैंक की इसी शाखा में है। शाखा में मुझे घर जैसे माहौल की अनुभूति होती है। अभी तक बैंक से मुझे व्यक्तिगत प्रयोग के लिए 5 कार ऋण भी स्वीकृत हुए हैं। फर्म में मेरे समकक्ष पार्टनर श्री सतीश कुमार के परिवार के सभी सदस्यों के बैंक खाते भी पंजाब एण्ड सिंध बैंक में ही है।

सन् 2010 से जितने भी शाखा प्रबंधक आए उन सभी का पूर्ण सहयोग हमारी फर्म को मिला। बैंक से जुड़ाव के बाद साकची शाखा में अनेक प्रभारी आए लेकिन सभी की भावना, ग्राहक–सेवा के प्रति एक जैसी ही रही है। शाखा के वर्तमान प्रबंधक श्री चंदन कुमार राय के साथ–साथ अन्य कार्मिकों का व्यवहार बैंक के सभी ग्राहकों के प्रति उत्तम है। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि भविष्य में हमारा बैंक इसी तरह प्रगति करता रहे।

मेसर्स गणपति इंटरप्राइजेस
जमशेदपुर, झारखंड

देवेन्द्र कुमार

खेल–खेल में हिंदी

मानव जीवन में खेलों के महत्व से कोई भी बुद्धिजीवी अनभिज्ञ नहीं है। शारीरिक विकास हो या मानसिक, दोनों के लिए खेल समान रूप से अपरिहार्य है। वर्तमान में मानसिक तनाव दूर करने या मनोरंजन के साधन की भूमिका से बहुत आगे निकलते हुए खेल, लोगों का कैरियर बनाने और प्रतिष्ठा अर्जित करने का माध्यम बन गया है। बचपन से लेकर वृद्धावस्था तक जीवन में खेलों की अलग–अलग भूमिकाएं तथा रूप हैं। खेल टीम भावना को विकसित करके राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करता है। इसमें देश की विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों को एकजुट करने तथा दर्शकों के बीच अपनेपन का भाव जागृत करने की कला अंतर्निहित है।

हमारे देश में देशीय या पारंपरिक खेल जैसे कबड्डी, खो–खो, दौड़, भाला–फेंक, कुश्ती, हॉकी इत्यादि खेलने वाले या इन खेलों में रुचि लेने वाले लोग सहजता से मिल जाएंगे क्योंकि इन खेलों के नियम या इनकी शब्दावली से सामान्य जन भलीभाँति परिचित हैं। वहीं गोल्फ, बेसबॉल, तैराकी, जिम्नास्टिक, टेनिस, घुड़दौड़, स्केटबोर्डिंग जैसे अनेक खेल ऐसे भी हैं जिनके प्रशंसक या इन्हें खेलने वाले हमारे देश में अपेक्षाकृत कम हैं। प्रश्न यह है कि जो भी खेल अंतर्राष्ट्रीय स्तर जैसे ओलंपिक, ग्रैण्ड–स्लैम, कॉमनवेल्थ, फीफा पर खेले जाते हैं उनमें भारत का मजबूत प्रतिनिधित्व कैसे हो या फिर खेलों के स्तर को भारत में ऊंचा कैसे उठाया जाए या खेलों में मिलने वाले पदकों की संख्या कैसे बढ़ाई जाए?

भारत में खेल आगे बढ़ रहे हैं लेकिन भारतीय, खेलों में आगे तभी बढ़ेंगे जब खेल की बारीकियां उनकी समझ में आने लगेंगी। खेल, खिलाड़ी या किसी टीम के साथ वास्तविक या व्यक्तिगत जुड़ाव तभी हो सकेगा जब दर्शकों के समक्ष खेल का विश्लेषण, उससे संबंधित जानकारी या उसकी पृष्ठभूमि दर्शकों के समझ में आ सकती हो। भारत की युवा शक्ति को खेल महाशक्ति बनाने की जो पहल शुरु हुई है वह तभी पूरी हो पाएगी जब खेल हमारे गाँवों की गलियों तक लोगों की अपनी भाषा में पहुंचेगा। जब तक खेल की कॉमेंट्री (आँखों देखा हाल/टीका–टिप्पणी), उनका विश्लेषण और उन पर होने वाली चर्चा हिंदी भाषा से परे में होगी तब तक भारत में उसका दायरा सीमित होना स्वाभाविक है इसलिए देश में खेल और खिलाड़ियों के सर्वांगीण विकास के लिए खेल का परिचय हिंदी भाषा में होना जरूरी है और इस दृष्टि से खेलों में हिंदी कॉमेंट्री (आँखों देखा हाल/टीका–टिप्पणी) की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। अन्य खेलों के मुकाबले भारत में क्रिकेट के प्रशंसक या इसे खेलने वाले या इसकी शब्दावली को जानने वाले लोग बहुतायात में मिल जाएंगे, इसका कारण और कुछ भी नहीं केवल और केवल 60 के दशक से क्रिकेट की हिंदी कॉमेंट्री ही है।

"जो कुछ बोलो, दिल से बोलो तो वह लोगों के दिल तक पहुंचेगी" हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध लेखक धर्मवीर भारती का ये कथन मशहूर क्रिकेट कमेंटेटर सुशील दोशी को कहे गए थे। भारती जी का ये कथन लोगों तक अपनी बात पहुंचाने के लिए 70 के दशक में भी

उतना ही प्रासंगिक थी जितना वर्तमान में। हिंदी कॉमेंट्री ने न केवल अनेक खेलों के लिए समर्पित दर्शक आधार बनाने वरन् खेलों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने वाली संस्कृति को भी संवर्धित किया है। क्रिकेट में रुचि का पुनरुद्धार हो या कबड्डी जैसे स्वदेशी खेल को बढ़ावा देना या फिर विश्व के सबसे लोकप्रिय खेल सॉकर के लिए भारत में जमीन और प्रतीभा तलाशने का कार्य, इन सबको हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं ने खूबसूरत तरीके से अंजाम दिया है।

खेल में कॉमेंट्री की शुरुआत 1922 में आस्ट्रेलिया के एक मैच से मानी जाती है। इसके बाद रेडियो कॉमेंट्री का पहला प्रसारण 1927 को इंग्लैंड के प्रसिद्ध क्रिकेट स्टेडियम लार्ड्स से किया गया था। भारत में रेडियो कॉमेंट्री की शुरुआत ऑल इंडिया रेडियो (आकाशवाणी) के माध्यम से 1940 में हुई। जब रेड़ियो पर अंग्रेजी में कॉमेंट्री होती थी तो गाँवों में कुछ ही लोग हुआ करते थे जो थोड़ी–बहुत या यूं कहें टूटी–फूटी अंग्रेजी समझा करते थे वो ही मैच का हाल बाकी लोगों को उनकी भाषा में बता दिया करते थे। रेडियो के पास बाकी लोगों का हुजूम केवल शोभा बढ़ाने और अनुवाद सुनने के लिए ही रहा करता था। सन् 1950 के अंत तक हिंदी कॉमेंट्री की शुरुआत हुई और इसने भारत में क्रिकेट को नया आयाम दिया। रवि चतुर्वेदी, जोगा राव और जसदेव सिंह के बाद मनीष देब, सुशील दोशी, स्कंदगुप्त और एम एम मंजुल ने 80 व 90 के दशक में हिंदी कॉमेंट्री को लोकप्रिय बना दिया। आज यह प्रमाणित करने की आवश्यकता नहीं कि भारत में क्रिकेट के लिए बड़े दर्शक वर्ग तैयार करने में सुशील दोशी की हिंदी कॉमेट्री कितनी महत्वपूर्ण रही।

रेडियो के बाद भारत में दूरदर्शन का आगमन 1959 में हुआ। टीवी पर चलते–फिरते दृश्य देखना किसी रोमांच से कम नहीं था। यह वह दौर था जब टेलीविजन अपनी रंगत बिखेरने लगा था और रंगीन टीवी आने के बाद वर्ष 1982 में एशियाई खेलों का सजीव प्रसारण होने के साथ ही टीवी की दुनिया बड़ी होने लगी। टीवी पर खेलों का सजीव प्रसारण और अंग्रेजी कॉमेंट्री के सामने रेड़ियो की हिंदी कॉमेंट्री कुछ समय के लिए लोगों के जेहन से ओझल होने लगी।

दूरदर्शन
सत्यम् शिवम् सुन्दरम्

कॉमेंट्री सुनने का माध्यम बदला और इस नए माध्यम की विशेषता यह रही कि इसमें कॉमेंट्री के साथ–साथ सजीव प्रसारण भी देखने को मिल रहा था लेकिन हिंदी कॉमेंट्री की लोकप्रियता को ज्यादा दिन तक नेपथ्य में रख पाना किसी के लिए संभव नहीं था। आदरणीय सुधीर पचौरी जी के अनुसार 'दूरदर्शन ने बातचीत विधा को जन्म दिया था जो वार्तालाप की जनतांत्रिक विचार–विधा है।' सुधार पचौरी जी के अनुसार टेलीविजन एक ऐसा माध्यम है जो दृश्य–श्रव्य होने के कारण साक्षर न हो सके लोगों को भी शिक्षित कर सकता है और साक्षर भी बना सकता है तो खेलों के विषय में जागरूक करने व साक्षर करने का कार्य भी टीवी चैनलों के माध्यम से अपेक्षाकृत सुव्यवस्थित तरीके से हो सकता था।

आज से लगभग 25 वर्ष पहले दूरदर्शन पर क्रिकेट का सीधा प्रसारण आता था जिसमें क्रिकेट की कॉमेंट्री कुछ समय तक अंग्रेजी फिर कुछ समय तक हिंदी में की जाती। आलम यह था कि दूर–सुदूर इलाकों में हिंदी कॉमेंट्री की बारी का इंतजार बड़ी बेसब्री से होता। खेलों में हिंदी कॉमेंट्री को अंग्रेजी के साथ दशकों तक चलाने का काम दूरदर्शन ने बड़ी सजगता के साथ किया। दूरदर्शन के माध्यम से शासन ने अनेक शैक्षणिक, गैर–शैक्षणिक कार्यक्रमों को कार्यान्वित किया लेकिन खेलों के संदर्भ में यह स्थिति बहुत अच्छी नहीं कही जा सकती। इसका कारण यह भी हो सकता है कि अन्य विषय शासन की प्राथमिकता सूची में ऊपर थी। जैसे–जैसे देश में नए निज़ी चैनलों का प्रसारण शुरु हुआ वैसे–वैसे स्थिति में बदलाव दृष्टिगत होने लगे। खासकर उस समय, जब निजी प्रसारण कंपनियों ने खेलों के लिए पृथक चैनल ही बना दिए जिनमें खेलों के सजीव प्रसारण के साथ–साथ अन्य कार्यक्रम भी खेलों से ही संबंधित होते हैं। प्रारंभ में इन निजी खेल चैनलों में दिखाए जाने वाले कार्यक्रमों की भाषा पूरी तरह अंग्रेजी में हुआ करती थी लेकिन लाभार्जन के लिए इन चैनलों ने भारतीय बाजार में अपने कार्यक्रम हिंदी में प्रसारित करने की कवायद की, जो पहले कुछ चुनिंदा खेलों तक सीमित थे। इसके बाद हिंदी भाषा ने इन चैनलों के बाजार को भारत में ऐसा विस्तृत किया कि इन्हें अलग से केवल

हिंदी भाषा में कार्यक्रम प्रसारित करने के लिए चैनल लाने पड़े।

नवंबर 2012 में स्टार क्रिकेट के लिए कपिल देव विज्ञापन लेकर आते हैं और कहते हैं "जो बात हिंदी में हैं वो किसी और में नहीं। देखिए इंडिया वार्सेज इंग्लैंड मैच हिंदी में सिर्फ स्टार क्रिकेट पर।" इन विज्ञापनों को टीवी पर ज्यादा दिन तक दिखाने की जरूरत नहीं पड़ी क्योंकि चैनल वाले ये बखूबी जानते थे कि भारत के लोग खेलों को अपने नजरिये से देखना चाहते हैं बस एक बार उनमें इसकी ललक जगानी है। विज्ञापन का लक्ष्य अपने पक्ष के उत्पादों की जानकारी देकर उत्पाद के प्रति जनता या उपभोक्ता को जागरूक बनाना तदनुरूप जनमत निर्धारण करना है लेकिन आपका लक्ष्य तभी पूरा हो पाएगा जब विज्ञापन में कहे गए संदेश लोगों की समझ में आए।

वर्ष 2016 में स्टार स्पोर्ट्स–3 चैनल द्वारा अपने स्वयं के प्रचार–प्रसार के लिए बनाए गए विज्ञापन पर नजर डालिए जिसमें क्रिकेटर वीरेन्द्र सहवाग और जहीर खान के साथ एक तीसरा व्यक्ति भी है। इस विज्ञापन में तीसरा व्यक्ति सहवाग को कॉमेट्री के दौरान अपनी भाषा और भावनाओं पर नियंत्रण रखने का अनुरोध करता है जिसके प्रत्युत्तर में सहवाग हल्का सा मुस्कुराकर सहमति जताते हैं। विज्ञापन का निष्कर्ष इस प्रकार से सामने आता है कि "15 मार्च से दिग्गजों के साथ देखिए आईसीसी टी–20 का घमासान अपने दिल की जुबान हिंदी में, सिर्फ स्टार–स्पोर्टस 3 और हॉट स्टार पर। हिंदी में बात है क्योंकि हिंदी में जज़्बात है।" भाषा और भाव का संबंध देखिए यदि संप्रेषण और संवाद अपनी भाषा में नहीं होगा तो लोगों की भावनाओं को न तो समझा जा सकता है और न ही आप उनके अनुकूल कुछ कर पाएंगे। जब लोग आपकी और आप लोगों की भावनाओं को ही नहीं समझ पाएंगे तो आपका प्रयास सार्थक नहीं होगा।

इन सबसे आगे बढ़कर भारत में प्रसारित होने वाले अंर्राष्ट्रीय स्तर के स्पर्धा वर्ल्ड रेसलिंग एनटरटेनमेंट (डब्ल्यूडब्ल्यूई), फुटबाल वर्ल्ड कप, यूरो कप जैसे खेलों के कॉमेंट्री की भाषा अब हिंदी होने लगी है। फुटबॉल वर्ल्ड कप के एक मैच में कॉमेंट्री पर नजर डालें "डिएगो कोस्टा को लंबी हवाई बॉल मिली है, अवसर बन सकता है डिएगो कोस्टा के लिए। डिफेंडर को बीट करने में कामयाब, शूट करने की कोशिश और कमाल कर दिया! पुर्तगाल 1, स्पेन 1"। प्रो कबड्डी लीग, आईपीएल और इंडियन सुपर लीग जैसी स्पर्धाओं की हिंदी कॉमेट्री ने भारत में न केवल इन खेलों के दर्शकों की संख्या में वृद्धि की है वरन् भारत में इन खेलों के लिए जमीन भी तैयार कर रही है।

टेलीविजन पर खेलों के सजीव प्रसारण की शुरुआत से लगभग तीन दशक बाद अब सजीव–प्रसारण के दौरान टीवी पर लिखी जाने वाली लिपि अंग्रेजी से देवनागरी होने लगी। जिसमें खिलाड़ियों के नाम, उनका संक्षिप्त परिचय तथा उनके खेल में अब तक के प्रदर्शन देवनागरी में लिखने की व्यवस्था की गई। इन सबसे आगे बढ़कर किसी खेल के संपन्न होने के बाद उस पर की जाने वाली चर्चा और प्रदर्शनों का विश्लेषण भी हिंदी भाषा में होने लगा, इन विश्लेषणों में खेलों से जुड़े हुए पूर्व खिलाड़ी ही आते हैं जिन्हें हमने उनके खेल–जीवन में हिंदी में बोलते हुए शायद ही सुना हो। चैनल, खेल और दर्शकों को इससे लाभ तो होता ही है साथ ही जो खिलाड़ी इस चर्चा में भाग लेते हैं उन्हें इससे अच्छी खासी आय भी हो जाती है। पहले खेलों की अंग्रेजी कॉमेट्री के लिए विदेशी खिलाड़ी को भी चैनलों द्वारा लिया जाता था जो प्रायः विदेश के हुआ करते थे लेकिन जब से हिंदी में कॉमेट्री की व्यवस्था प्रारंभ हुई है तब से पूरे खेल के दौरान हिंदी कॉमेंटेटर ही कॉमेंट्री करता है और जाहिर सी बात है कि ये हिंदी कॉमेंटेटर भारत के ही होंगे। अब आलम यह है कि हिंदीतर क्षेत्र के खिलाड़ी भी खेल चैनलों पर हिंदी में

टिका–टिप्पणी, विश्लेषण करते नजर आ रहे हैं। इतना ही नहीं इनकी हिंदी अपेक्षाकृत कम शुद्ध होती है या यूं कहें ये हिंदी की शब्दावली से परिचित नहीं होते लेकिन हिंदी भाषा का जादू ही कहिए जब कोई हिंदीतर भाषी इसका प्रयोग करते हैं तो ये सुनने में बड़े ही आनंद की अनुभूति कराने वाले होते हैं। एक हिंदीतर भाषी कॉमेंटेटर की कॉमेंट्री सुनिए "पैर जो है हमेशा बैंड होता है ब्रायर लारा का लेकिन हमेशा वेट जो है हमेशा बॉल के ऊपर आता था और कहां भी फील्ड हो, बीच मे गैप ढूंढने में कामयाब होते थे।"

वर्ष 2021 में टोक्यों में हुए ओलंपिक खेलों में पहली बार हिंदी में कॉमेंट्री की व्यवस्था की गई। 32 वाँ टोक्यो ओलंपिक–2020 का आयोजन भले ही विदेश में हुआ हो लेकिन भारत में उसका प्रसारण हिंदी भाषा में किया गया। यह परिवर्तन कितना बड़ा था इसे इस बात से समझा जा सकता है कि दशकों पूर्व भारत के प्रधानमंत्री, संयुक्त राष्ट्र संघ को हिंदी में संबोधित करते हैं और भारत में उनके भाषण की प्रतियां अंग्रेजी में उपलब्ध करायी जाती है। ओलंपिक खेल–2020 के प्रसारण का अधिकार निजी कंपनी सोनी पिक्चर्स नेटवर्क्स इंडिया के पास था लेकिन इसके चैनलों टेन 1, टेन 2 तथा टेन 4 में हिंदी कॉमेंट्री व कुछेक क्षेत्रीय भाषा में कॉमेंट्री की भी व्यवस्था की गई थी। पुरुषों के ब्रॉज मेडल हॉकी मैच की शुरुआत में हिंदी कॉमेट्री की लाइन देखिए ''41 साल बाद ये पहला मौका है जब भारत की पुरुष हॉकी टीम पोडियम पर खड़ी दिखाई दे सकती है। जर्मनी बनाम भारत ब्रॉज मेडल मैच। चरम सीमा को पार करता हुआ पोडियम फिनिश मैच'' और "अब नजरें भारत की मीराबाई चानु पर! पहले 84 किलो और अब 87 किलो लिफ्ट किया" हिंदी कॉमेट्री के दौरान कहे गए हर लाइन इसी तरह की होती थी जो सीधे दिल पर दस्तक देती थी। हिंदी कॉमेंट्री के दौरान हॉकी में पेनेल्ट्री कॉर्नर, स्कूप, सेंटर फॉरवर्ड, सर्कल एंट्री, कॉर्नर जैसे शब्दों को भरपूर उल्लेख हुआ। देशी भाषा में कहे जाने वाला खेल भाला फेंक जिसे जेवलीन–थ्रो कहकर हमनें लोगों के लिए दुर्गम कर दिया था, नीरज चोपड़ा ने भारत को इस खेल में स्वर्ण पदक दिलाने के साथ यह भी याद दिलाया कि यह आपका अपना खेल है। टोक्यो ओलंपिक में खेले गए खेल जिनमें भारतीय खिलाड़ियों नें भाग लिया जैसे कुश्ती, भरोत्तोलन, तलवारबाजी, घुड़सवार, जिम्नास्टिक, डिस्कस थ्रो यहाँ तक कि गोल्फ जैसे खेलों में भी हिंदी कॉमेट्री प्रभावी रही। इस निजी कंपनी ने यह दिखा दिया कि खेलों में हिंदी कॉमेट्री हो सकती है और भारत का विशाल जनसमुदाय इसे हर्ष के साथ स्वीकार करता है। अब तो निजी खेल वेबसाइट भी अपने कार्यक्रम हिंदी भाषा में प्रसारित कर रही है।

बहरहाल, खेल चैनल भले ही अपने आर्थिक उद्देश्य के लिए हिंदी भाषा व क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग कर रहे हों लेकिन हमें इसे अपने लाभ की दृष्टिकोण से परखना होगा। भारत में रामचरित मानस के बहुतेरे मर्मज्ञ, प्रशंसक या इसके श्रोता मिल जाएंगे। इसके मूल में देखें तो आपको यह मिलेगा कि इसका प्रचार–प्रसार क्षेत्रीय भाषा और हिंदी भाषा में ही हुआ है। ठीक इसी प्रकार खेल–खिलाड़ी की भावना जाग्रत करने के लिए लोगों को खेल शब्दावली, नियमों से परिचित कराना आवश्यक है। भारतीय संदर्भ मे किसी विषय–वस्तु को लोकप्रिय बनाना है तो जनमानस के बीच उसके संप्रषेण माध्यम, भाषा पर विचार करना होगा। वही राष्ट्र विकसित, सामर्थ्यवान, अग्रणी बनता है जिनके युवा शारीरिक तथा मानसिक रूप से स्वस्थ होते है और इसमें खेल की उपयोगिता स्वप्रमाणित है। आवश्यकता है कि खेलों को लोगों की अपनी भाषा में उन तक पहुंचाने की। विगत कुछेक वर्षों में टीवी के माध्यम से जो यह कार्य हुआ है वह काबिल–ए–तारीफ है। जहाँ एक ओर निजी खेल चैनलों ने हिंदी कॉमेंट्री के भरोसे भारत में अपना बड़ा दर्शक–वर्ग तैयार करने में सफलता हासिल की है वहीं दूसरी ओर खेलों के प्रचार–प्रसार में चैनलों की भूमिका अद्वितीय रही है।

निष्कर्षतः भारतीय परिदृश्य में खेल–खेल में हिंदी, खेलों के मूलभूत उद्देश्य की प्राप्ति के लिए आवश्यक तो है ही साथ में भारत को एक खेल राष्ट्र के रूप में अविर्भावित करने के लिए प्रासंगिक भी है।

प्रधान कार्यालय
राजभाषा विभाग

नराकास उपलब्धियां

बैंक के अंचल कार्यालय गुरुग्राम को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), गुरुग्राम द्वारा वर्ष 2020–21 के लिए प्रशासनिक कार्यालयों की श्रेणी में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए 'प्रथम पुरस्कार' प्रदान किया गया। छायाचित्र में अंचल कार्यालय गुरुग्राम के आँचलिक प्रबंधक व अन्य स्टाफ सदस्य।

बैंक की शाखा हींग की मंडी, आगरा को वर्ष 2020–21 के दौरान भारत सरकार की राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन और सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने में उत्कृष्ट योगदान के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, आगरा (बैंक) द्वारा प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। प्रथम पुरस्कार स्वरूप राजभाषा शील्ड व प्रमाण–पत्र प्राप्त करते हुए शाखा प्रबंधक श्री विजय कुमार।

बैंक नराकास जोधपुर द्वारा बैंक की शाखा चौपासनी रोड, जोधपुर को वर्ष 2020–21 के लिए राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की दिशा में उत्कृष्ट कार्य–निष्पादन हेतु प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। छायाचित्र में शाखा प्रभारी श्री शंकर लाल सोलंकी, राजभाषा शील्ड व प्रशंसा–पत्र प्राप्त करते हुए।

यदि मनुष्य सीखना चाहे तो उसकी हर भूल उसे कुछ शिक्षा दे सकती है। – महात्मा गाँधी

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक) कोलकाता द्वारा अंचल कार्यालय कोलकाता को वर्ष 2020–21 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन में श्रेष्ठ कार्य–निष्पादन के लिए प्रशासनिक वर्ग में तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। छायाचित्र में आँचलिक प्रबंधक, राजभाषा अधिकारी और कार्यालय के अन्य स्टाफ सदस्य।

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भोपाल द्वारा हमारे अंचल कार्यालय भोपाल को वर्ष 2020 में राजभाषा हिंदी में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया। छायाचित्र में स्टाफ सदस्यों के साथ आंचलिक प्रबंधक भोपाल।

नराकास (बैंक), लुधियाना द्वारा हमारे बैंक के अंचल कार्यालय लुधियाना को नराकास राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता 2020 में प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया। छायाचित्र में नराकास के मंच पर आँचलिक प्रबंधक लुधियाना तथा राजभाषा अधिकारी उपस्थित रहे।

प्रधान कार्यालय में हिंदी

हिंदी राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है। - डॉ. संपूर्णानंद

दिवस समारोह –2021

सुशील कुमार

मैं समय बोल रहा हूँ!

"काल करे सो आज कर, आज करे सो अब। पल में प्रलय होएगी, बहुरि करेगा कब।।"

उपर्युक्त पंक्तियों में छिपी समय की महत्ता जगजाहिर है। समय–चक्र अपनी गति से गतिमान है या यूं कहें कि भाग रहा है अक्सर इधर–उधर कहीं न कहीं, किसी न किसी से ये सुनने को मिलता ही रहता है कि क्या करें समय ही नहीं मिलता। वास्तव में हम निरंतर गतिमान समय के साथ कदम से कदम मिला कर चल ही नहीं पा रहे जिसकी वजह से पिछड़ रहे हैं। वैसे हम समय जैसी मूल्यवान संपदा का भंडार होते हुए भी हमेशा उसकी कमी का रोना रोते रहते हैं। हम विकास की कठिन राह पर हैं फिर भी समय की बरबादी कर रहे हैं जो हमारा सबसे बड़ा शत्रु है। एक बार बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता, हमारा बहुमूल्य वर्तमान हर पल भूत बनने के लिए तैयार है और हम हैं कि हर काम को कल पर टाल कर निश्चिंत बैठकर अपने उज्ज्वल भविष्य की कल्पनाओं में खोए हुए हैं। आज का बना भोजन हम कल नहीं खाते क्योंकि बासी खाना हमें पसंद नहीं तो हम आज का काम कल पर और कल का काम परसों पर टालने में बासीपन महसूस क्यों नहीं करते जबकि उस काम को समय पर करके ताजा खाना खाने जैसा मजा ले सकते हैं। समय वैसे तो बहुमूल्य धन की भांति है लेकिन इसको सोने–चाँदी की तरह सहेज कर रखना संभव नहीं है क्योंकि समय की प्रकृति ही गतिमान रहने की है। समय पर किसी का अधिकार तभी तक है जब तक इसका सदुपयोग किया जाए अन्यथा इसके वर्तमान स्वरूप को नष्ट होकर भूत में परिवर्तित होने में समय नहीं लगता।

समय का सदुपयोग उसी प्रकार से होना चाहिए जिस प्रकार धन का सदुपयोग किया जाता है क्योंकि हम सभी की सुख–सुविधाएँ इसी पर निर्भर है। समय के प्रबंधन को प्रकृति से स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है। समय का कालचक्र प्रकृति में नियमित है, दिन–रात, ऋतुओं का समय पर आना–जाना है। यदि कहीं भी अनियमितता होती है तो प्रकृति अपनी विनाश–लीला भी दिखा देती है। समय की उपेक्षा के परिणाम में विजय को पराजय बनने में ज्यादा समय नहीं लगता। जगजाहिर है कि खोई हुई धन–संपत्ति फिर भी कमाई जा सकती है, भूली हुई विद्या फिर से प्राप्त की जा सकती है किंतु बीते हुए समय को पुनः वापस नहीं लाया जा सकता, सिर्फ पश्चाताप ही शेष रह जाता है। समय के गर्भ में लक्ष्मी का अक्षय भंडार भरा है किंतु इसे वही पाते हैं जो इसका सही उपयोग करते हैं। जापान

इसका एक जीवंत उदाहरण है, वहाँ के नागरिक अपने व्यावसायिक कार्य से फुरसत मिलने पर छोटी मशीनों या खिलौनों के पुर्जों से नियमित रूप से एक नया खिलौना या मशीनें बनाते हैं। इस कार्य से उन्हे अतिरिक्त धन की प्राप्ति होती है। उनकी खुशहाली का सबसे बड़ा कारण समय का सदुपयोग ही तो है।

एक आम और सत्य कहावत है कि "समय और ज्वार–भाटा किसी का इंतजार नहीं करते" समय अपनी निर्बाध गति से चलता रहता है। समय आता है और चला जाता है पर रुकता कभी नहीं। समय सभी के लिए निःशुल्क है, कोई भी इसे ना तो कभी बेच सकता है और ना ही खरीद सकता है। कोई भी इसकी सीमा निर्धारित नहीं कर सकता। समय को ब्रह्मांड की सबसे शक्तिशाली वस्तु कहा जाता है क्योंकि ये अजेय है।

समय तो जीवन के उच्चतम शिखर पर पहुँचने की सीढ़ी है। प्रकृति ने किसी को भी अमीर या गरीब नहीं बनाया बल्कि उसने तो अपनी बहुमुल्य संपदा अर्थात् "समय" को भी सभी में बराबर बांटा है। मनुष्य कितना ही परिश्रमी क्यों न हो परन्तु समय पर कार्य न करने से उसका श्रम व्यर्थ चला जाता है। वक्त पर न काटी गई फसल नष्ट हो जाती है। असमय बोया बीज बेकार चला जाता है। जीवन का प्रत्येक क्षण एक उज्ज्वल भविष्य की संभावना लेकर आता है। क्या पता जिस क्षण को हम व्यर्थ समझ कर बर्बाद कर रहे हैं वही पल हमारे लिए सफलता का क्षण हो। आने वाला पल तो कुसुम की तरह है इसकी खुशबू से स्वयं को सराबोर कर लेना चाहिए।

निर्धारित समय पर निर्धारित काम करने वाला व्यक्ति ही जीवन में सफलता को प्राप्त कर सकता है इसलिए अपेक्षित है प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में समय के मूल्य को पहचाने। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कौन हैं – आप डॉक्टर हैं, वकील हैं, बड़े सेठ हैं, प्रोफेसर हैं, विद्यार्थी हैं लेकिन यदि आप समय का उपयोग योजनाबद्ध तरीके से नहीं करते तो आप जीवन जी नहीं रहे हैं बल्कि दिन काट रहे हैं। जीवन का लक्ष्य दिन काटना नहीं है, मात्र दिन काटने से आपके लक्ष्य की पूर्ति नहीं होती। आपके लक्ष्य की पूर्ति तो सुख से भरपूर जीवन जीने में होती है। सदियों से हमारे ऋषि–मुनियों ने समय के सदुपयोग की शिक्षा दी है । एक बार एक धनिक श्रद्धालु ने ऋषि से कहा– "हे मुनिवर! श्रेष्ठ कार्यों में समय लगाना तो आवश्यक है, यह मैं भी मानता हूँ, लेकिन यदि कोई समयाभाव के कारण वैसा नहीं कर सके तो फिर क्या करे?" आचार्य ने रहस्यमयी मुस्कान बिखेरी और फिर बोले– "श्रेष्ठि! मुझे तो कोई व्यक्ति आज तक ऐसा नहीं मिला, जिसे विधाता ने एक दिन में चौबीस घंटों में से एक पल भी कम दिया हो। फिर समय के अभाव से आपका क्या अभिप्राय है?" फिर स्पष्ट करते हुए आचार्य धीरे से बोले– "वत्स! जिसे आप समयाभाव कहते हो वह समय की कमी नहीं है, समय की अव्यवस्था है। इस कारण समय कई अनुपयोगी और अनावश्यक कार्यों में लग जाता है – उपयोगी कार्यों के लिए समय नहीं बच पाता। इसी को हम समय का अभाव कहते हैं।" समय की अव्यवस्था ही समय का अभाव है।

आप कितने घंटे काम करते हैं, यह महत्त्वपूर्ण नहीं – उन घंटों में आप क्या काम करते हैं, यह महत्त्वपूर्ण है। देखा जाए तो हमारे पास समय ही समय है। जीवन का अर्थ ही है – समय! समय हमारी समस्या नहीं है, समस्या तो हमारी अनभिज्ञता है – हम अपनी प्राथमिकताओं से अनभिज्ञ हैं। फिर हम इस अनभिज्ञता का प्रदर्शन बड़े गर्व से करते हैं – "हमारे पास तो समय नहीं है।" सोचिए जरा! क्या अर्थ है इसका? इसका अर्थ है कि हमने समय को अपना मालिक बना दिया है और स्वयं को उसका दास। इसका अर्थ है कि हम समय का उपयोग करना नहीं जानते इसलिए समय हमारा उपयोग करने लगा है लेकिन जो अपनी प्राथमिकताओं को जान लेता है, वह समय का मालिक बन कर जीता है। वह इसी समय में सब कुछ पा जाता है।

इस तरह से यदि हम अपने समय का सही सदुपयोग और उसका सही नियोजन करें तो हम निश्चित तौर पर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ेंगे। किसी ने ठीक ही कहा है –

समय के साथ चल प्यारे।
नहीं तो हाथ मल प्यारे।
समय बलवान होता है,
"प्रखर" इससे सभी हारे।

अंचल कार्यालय बठिण्डा

हिंदी कार्यशाला

एसटीसी रोहिणी, नई दिल्ली

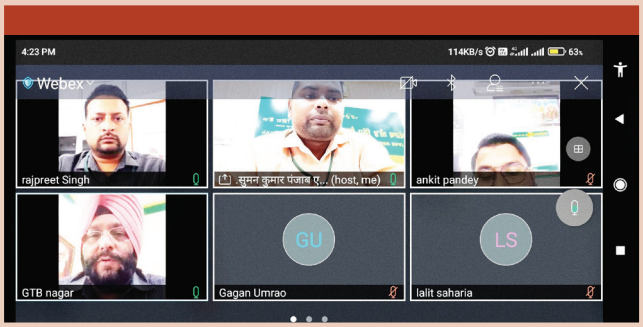

अंचल कार्यालय गुरदासपुर

अंचल कार्यालय गुरुग्राम

अंचल कार्यालय दिल्ली–I

अंचल कार्यालय भोपाल

अंचल कार्यालय लुधियाना

अंचल कार्यालय लखनऊ

अंचल कार्यालय गाँधीनगर, गुजरात

भारतीय भाषाएं नदियां हैं और हिंदी महानदी। – रवीन्द्रनाथ ठाकुर

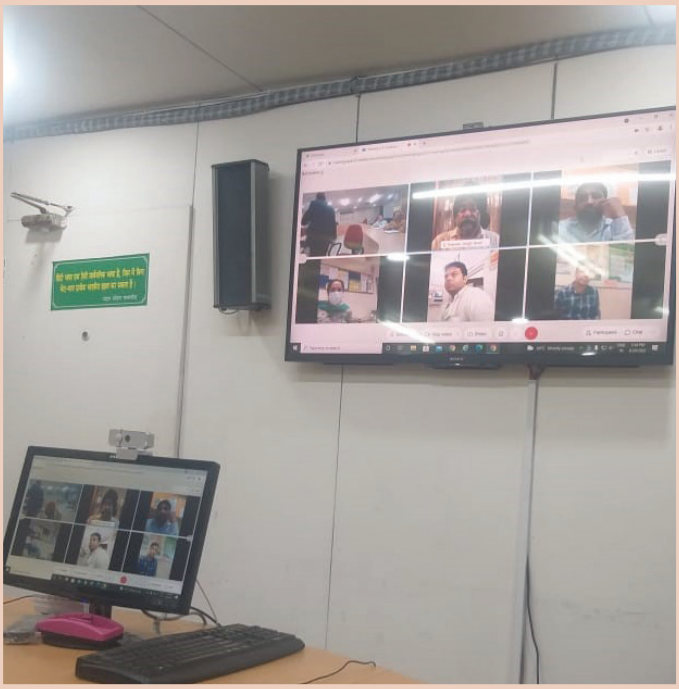

क्षेत्रीय महाप्रबंधक कार्यालय चंडीगढ़

प्रतिभागी

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से, अपनी प्रतिबद्ध ता और प्रयासों से, प्रशिक्षण और प्राइज से अपने साथियो में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे, अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए, अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रसासरत रहेंगे।

जय राजभाषा! जय हिंदी!

ऐतिहासिक क्षण –

बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री एस. कृष्णन ने केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री निशिथ प्रामाणिक के कर कमलों से राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (द्वितीय) प्राप्त किया। यह पुरस्कार हमारे बैंक को 2019-20 के दौरान राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए राष्ट्रीयकृत बैंकों एवं वित्तीय संस्थानों की श्रेणी के अंतर्गत 14 सितंबर, 2021 को विज्ञान भवन में आयोजित हिंदी दिवस समारोह-2021 में प्रदान किया गया। पुरस्कार वितरण समारोह में बैंक की ओर से मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री कामेश सेठी तथा वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्री निखिल शर्मा भी उपस्थित रहे।

सत्य से कीर्ति प्राप्त की जाती है और सहयोग से मित्र बनाए जाते हैं। – कौटिल्य

राजभाषा कीर्ति पुरस्कार

अंतर अंचल राजभाषा शील्ड

अंचल कार्यालय गुरुग्राम

अंचल कार्यालय लुधियाना

अंचल कार्यालय कोलकाता

अंचल कार्यालय बरेली

अंचल कार्यालय चेन्नई

मनुष्य का पतन कार्य की अधिकता से नहीं वरन् कार्य की अनियमतता से होती है। - अज्ञात

तनय वर्मा

ज़रा सोचिए...?

जैसे–जैसे सुविधाएं सुलभ होती जा रही हैं वैसे–वैसे उनमें जोखिम की संभावना भी बढ़ती जा रही है। घर में कुछ पुराने फर्निचर रखे थे। सोचा इन अनावश्यक पड़े फर्निचरों को बेच देते हैं। अभी के चलन के अनुसार ऑन–लाइन बेचना ही ठीक लगा इसलिए मैंने फर्निचरों को बेचने के लिए आवश्यक जानकारी जैसे मूल्य, फर्निचरों की तस्वीर, पता व संपर्क संख्या ओएलएक्स पर ऑन–लाइन साझा कर दी। अपेक्षा के अनुरूप ही जल्द ही मुझे एक व्यक्ति का फोन आ गया। सामने वाले ने कहा कि उसे फर्निचर पसंद है और फर्निचरों के मूल्य के लिए भी उसने कोई मोलभाव नहीं किया। उसने कहा कि मैं आपको पेमेंट ऑन–लाइन माध्यम से कर दूंगा फिर किसी को भेजकर आपके घर से फर्निचर उठवा लूंगा।

खरीदने वाले ने मुझसे एक जानकारी और ली कि ऑन–लाइन लेनदेन के लिए मैं कौन सा एप प्रयोग करता हूँ। अपने द्वारा प्रयोग में लाए जा रहे एप की जानकारी मैंने उसे दे दी। खरीददार ने पहले तो मुझसे कहा कि वह ₹500/– का टोकन एमाउंट भेजकर कंफर्म करना चाहता है कि पैसे मेरे ही खाते में पहुंच रहे हैं। इसके लिए उसने मुझसे मेरे मोबाइल पर एसएमएस से आए हुए कोड को साझा करने के लिए कहा और मैंने उससे वह कोड साझा किया। जब टोकन राशि मेरे खाता में आ गया तो मैंने खरीददार को कंफर्म किया कि पैसे मेरे खाते में आ गए हैं। इसके बाद खरीददार ने टोकन राशि को घटाकर फर्निचर के बाकी बचे हुए पैसे थोड़ी देर से भेजने की बात कही। मैं इंतजार में था कि फर्निचर के बाकी पैसे भी जल्द मेरे बैंक खाते में आ जाएंगे लेकिन पंद्रह मिनट बाद आने वाला मैसेज खाते में राशि क्रेडिट होने का नहीं बल्कि राशि डेबिट होने का था। मैं परेशान हुआ कि बिना ओटीपी बताए या किसी लिंक पर क्लिक किए बिना मेरे बैंक खाते से राशि डेबिट हो गए थे जो टोकन राशि से कहीं अधिक थे। शायद पहले पैसे लेने के लिए बताए गए कोड से उसने कुछ समय के लिए मेरे फोन से जानकारी ले ली या फोन हैक कर लिया होगा।

पुलिस में रिपोर्ट लिखाया, रिपोर्ट लिखाने के बाद यह प्रकरण लगभग दो साल तक चलता रहा जिसमें कई बार मुझे थाना भी जाना पड़ा। प्रशासन अपना कार्य करती रहती है लेकिन हमें भी अपना समय निकालकर उनका सहयोग करना पड़ता है, इसी क्रम में अनेक बार मानसिक कष्ट भी उठाना पड़ता है। पुलिस और प्रशासन अपने कार्य में लगे हुए हैं। असामाजिक तत्वों से जनसाधारण की रक्षा करना तथा उपद्रवियों को सजा दिलाना उनका कार्य है लेकिन सजग रहकर प्रशासन की सहायता करना हमारा कर्तव्य है और हम इससे अपने आप को होने वाली मानसिक पीड़ा से बचा भी सकते हैं। अब तो आरबीआई तथा अन्य वित्तीय संस्थान अपने व्यय पर विज्ञापन जारी करते हैं कि किसी भी लिंक पर क्लिक न करें या किसी भी अनजान व्यक्तियों से अपने एटीएम या बैंक खाते से संबंधित जानकारी साझा न करें लेकिन व्यक्ति लालचवश कोई न कोई भूल कर बैठता है। प्रशासन ने अपनी तरफ से लोगों को जागरूक करने की कोई कसर नहीं छोड़ी है इसलिए अब जनसाधारण अर्थात् हमें इस विषय में सोचने की जरूरत है।

प्रधान कार्यालय
मानव संसाधन विकास विभाग

अभिनव त्रिपाठी

बैंक की लाभप्रदता में भाषा

बैंकिंग क्षेत्र के लिए हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाए केवल सांविधिक अपेक्षाओं का अनुपालन मात्र नही है बल्कि ग्राहक सेवा और विपणन जैसे महत्वपूर्ण मसलों में ग्राहक की भाषा ही उन्हें जोड़ने का कार्य करती है इसलिए आवश्यक है कि ग्राहक वर्ग बढ़ाने और व्यवसाय की लाभप्रदता बनाए रखने के लिए हिंदी और अन्य भारतीय भाषा को ज्यादा से ज्यादा अपनाया जाए। बैंकिंग के क्षेत्र में हिंदी के मूल लेखन में कमी काफी दिनों से महसूस की जा रही है। भारत गाँवो में बसता है और सबसे अधिक आवश्यकता इन्हीं ग्रामीण लोगों को बैंकिंग प्रणाली से जोड़ने की है। यह वर्ग अधिकांश हिंदी भाषा ही समझता और बोलता है। आज बैंकिंग व अन्य वित्तीय व्यवसाय में प्रतिस्पर्धा है, चुनौती है, आगे बढ़ने की होड़ है, क्षेत्र विस्तृत ही होता जा रहा है तो ऐसे में तो हिंदी का महत्व और भी बढ़ जाता हैं। सभी सरकारी व निजी बैंक, बीमा कंपनी में भी प्रयोग में आने वाली सारी सामग्री, दस्तावेजी काम अधिकतर हिंदी में हो रहे हैं और हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के प्रचार के लिए अनेक उपाय किए जा रहे हैं।

किसी भी समाज या राष्ट्र के आर्थिक जगत की धुरी उस देश की बैंकिंग व्यवस्था होती है। बैंकिंग एक सेवा उद्योग है और किसी भी सेवा उद्योग में ग्राहक की भाषा का महत्व बहुत ज्यादा होता है। आजकल बैंकों में हिंदी का प्रयोग कम बल्कि अंग्रेजी का प्रयोग अधिक होता है जिसकी वजह से अनपढ़ या कम पढ़े लिखे लोगों को काफी परेशानी होती है। बैंकों में हिंदी का प्रयोग बढ़ाना न सिर्फ एक सांविधिक दायित्व है बल्कि इससे बैंकिंग सेवा जन–जन तक पहुंचाने में काफी मदद मिलेगी और परिणामस्वरूप कम पढ़े लिखे लोग भी बैंकों में बेझिझक पहुंचकर अपनी लेन–देन की प्रक्रिया आसानी से कर सकेंगे जिससे बैंकिंग कारोबार में भी काफी बढ़ोतरी हो सकती है। सामाजिक बैंकिंग के इस युग में जनता की भाषा हिंदी में काम कर बैंकों में बेहतर ग्राहक सेवा प्रदान करना एक अभिन्न अंग बनना चाहिए जिससे कि ग्राहक हमसे ज्यादा से ज्यादा

जुड़ सके, हमारे उत्पादों की जानकारी उन तक पहुंच सके एवं वे उसका फायदा ले सके। आज अधिकांश कार्य अंग्रेजी में हो रहा है जबकि हिंदी सरल एवं वैज्ञानिक भाषा है, हिंदी जानना, बोलना और लिखना पिछड़ेपन की निशानी नहीं है बल्कि यह तो गरिमामयी राष्ट्रीय अभिव्यक्ति हैं। हिंदी राष्ट्रीय गौरव और अस्मिता का प्रतीक ही नहीं भारत के आत्मा की आवाज हैं। यही आवाज बैंकिंग व अन्य वित्तीय व्यवसाय में हिंदी की महत्ता को समझते हुए गुंजायमान होगी तो हिंदी हिन्द का गौरव होगी और इसलिए बैंक की लाभप्रदता में भाषा की भूमिका अहम हैं। जब हम ग्राहक की ही भाषा में उनसे बात करते है, समझाते है तो वो अपने आप को सहज महसूस करते है और बातें अच्छे तरीके से समझ जाते है। इस प्रकार ग्राहक अपना बैंक का काम बिना किसी परेशानी के अच्छे से कर लेते है।

हमारे भारत में चाहे कोई भी राज्य हो, लोगों को हिंदी बोलना थोड़ा बहुत तो आता ही हैं। इसके विपरित अंग्रेजी, कम पढ़े–लिखे लोगों को ना बोलने आता है ना उनकी समझ में आता है। अगर बैंक में काम करने वाले कर्मचारी हिंदी या स्थानीय भाषा का प्रयोग करेंगे तो ग्राहकों के साथ–साथ बैंक के लिए भी काफी फायदेमंद

भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है। हिंदी ने इन पहलुओं को सूबसूरती से समाहित किया है। – नरेंद्र मोदी

होगा। वित्तीय व्यवसाय में हिंदी को तभी सम्पूर्ण महत्व मिल पाएगा जब वह सूचना प्रौद्योगिकी को अपने अंदर आत्मसात कर लेगी। यह तकनीक भी अपने प्रवाह के लिए भाषा का माध्यम ढूंढती है और जनभाषा से बेहतर कोई अन्य सशक्त माध्यम नहीं हो सकता। इसी कारण से देश के किसी भी कोने तक हमारा संपर्क आसान हो गया है। आज घर बैठे, भाषा चयन करके मोबाइल, लैपटॉप पर बैलेंस, स्टेटमेंट देखिए, नेट बैंकिंग के माध्यम से लेन–देन कीजिए, कितना आसान हो गया है सब–कुछ, वो भी सब हिंदी में। आखिर जन–जन की भाषा–हिंदी, करोड़ों लोगों की ह्रदय स्पंदन कैसे पीछे रह सकती है। बैंकिंग व अन्य वित्तीय व्यवसाय में हिंदी के महत्व को बताता यह अनवरत निरंतर प्रयास कवि दुष्यंत की यह पंक्तियां ही दोहराता–सा लगता है–

"कौन कहता है, आसमां में छेद नहीं हो सकता,
एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारों।"

तबियत से उछाला गया यह पत्थर ईमानदारी, निष्ठा, आत्मविश्वास से भरा प्रयास एक दिन हिंदी को आसमां की ऊंची ऊंचाईयों तक जरूर ले जाएगा। बैंक में खाता खुलवाने वाले अधिकतर आम गरीब मजदूर, छोटे किसान होते है, यह सब हिंदी की भाषा आसानी से समझ पढ़ लेते है, बैंक का कारोबार ग्राहकों के वजह से ही बढ़ेगा। ग्राहक संख्या का व्यापक विस्तार होगा, जन–जन तक पहुंचने पर बैंक की स्वीकार्यता बढ़ेंगी। हिंदी की महत्ता को अमीर–गरीब, बड़े–छोटे, सभी ने अनुभव किया है। इन्हीं सब वर्गों के ग्राहकों ने ही हिंदी की सुलभता, सरलता को अपना कर, जुड़कर, आज बैंकिंग व अन्य वित्तीय संस्थानों के क्षेत्र को व्यापक आकाश में दैदीप्यमान कर दिया है। हमें सिर्फ हिंदी में ही कार्य द्वारा संतोष नहीं करना है बल्कि लोगों के दिल तक घर करना है ताकि वो बैंक के प्रति जागरूक हो। ज्यादा से ज्यादा लोगों तक अपनी बात समझाई जाए, हमारी पहुंच का आधार व्यापक, विस्तृत और विशाल होना चाहिए। भारत देश के संदर्भ में अंग्रेजी के वर्चस्व के बावजूद हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं का भविष्य उज्जवल है। राष्ट्रीयता की भावना, राष्ट्रभाषा के प्रति अगाध प्रेम इन संभावनाओं को कभी मिटा नहीं सकता। इससे एक नया आयाम, नया आकार मिलेगा। यह सच है कि नित बदलाव के युग में हिंदी के वर्चस्व की संभावनाएं अनंत हैं। इनका कभी अंत नहीं होगा।

"बांधे जाते इंसान कभी, तूफान न बांधे जाते हैं।
काया जरूर बांधी जाती, बांधे न इरादे जाते हैं।।"

विभिन्न बैंकों के राजभाषा विभाग अपने दायित्वों को पूरा करने में व्यस्त है तथा इससे राजभाषा की लोकप्रियता में बढ़ोतरी हुई हैं। स्थानीय भाषा को सुनकर स्थानीय ग्राहक खुश होते है और राजभाषा से जुड़े रहते हैं। हिंदी या स्थानीय भाषा बोलने पर ग्राहक अपने आप को काफी सहज महसूस करते है परंतु वही हिंदी या स्थानीय भाषा नही बोलने पर ग्राहक खुद को बहुत असहज महसूस करते है और उनको बैंक में कोई दिलचस्पी नही होती। एक तरफ सरकार द्वारा जनधन योजना के तहत हर एक ग्रामीण का खाता खुलवाया जा रहा है लेकिन कितने लोग उसका लाभ उठा रहे हैं यह कहना बहुत मुश्किल हैं। जब तक ग्राहकों को उसकी राष्ट्रभाषा, स्थानीय भाषा नहीं मिलेगी तब तक वो बैंक से नहीं जुड़ पाएँगे। हमारे देश में बहुत से घर ऐसे है जहाँ पति घर से बाहर अन्य राज्यों में काम कर रहे हैं, वो बैंक खाते में पैसा भेजते हैं तो उनकी पत्नियों को पैसा निकालने में भाषा के अवरोध के कारण काफी परेशानी होती है। अगर बैंकों में अंग्रेजी का प्रयोग ना करके हिंदी या स्थानीय भाषा का प्रयोग किया जाए तो ग्राहक के साथ–साथ बैंकों के लिए भी काफी फायदेमंद होगा। हिंदी का अधिकतम प्रयोग ही बैंकिंग व अन्य वित्तीय व्यवसाय को प्रगति देगा, उन्नति के नए कीर्तिमान स्थापित करेगा। हमें तो स्वयं को हिंदी के प्रयोग में ढालना ही होगा, हमारे पास तो संख्या बल है, युवा शक्ति है, पढ़े–लिखे, समझदार और मातृभाषा हिंदी को महत्व देने वालों की तादाद करोड़ों में है। अगर इन करोड़ों तक पहुंचना है, बैंकिंग व अन्य वित्तीय व्यवसाय में निरंतर विस्तार लाना है, लाभप्रदता बढ़ानी है, विकास की ऊंचाइयों को छूना है तो रोजमर्रा के काम में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना ही होगा। हिंदी को सरलतम, सुलभ ढंग से नित नई तकनीक का प्रयोग कर, आम आदमी की पहुंच में ला कर ही बैंकों व अन्य वित्तीय संस्थानों के लिए अपने व्यवसायिक लक्ष्यों को पाना आसान होगा।

शाखा – बम्हनपुर,
अंचल कार्यालय– बरेली

सौम्या मित्तल

एहसास

"पापा मुझसे गलती हो गई, मुझे माफ कर देना..." अचानक सुधा को अपने सामने गिड़गिड़ाते हुए पिता महेश जो सुबह अपनी बेटी के लिए चिंतित हुए दिखाई दे रहे थे उनके अस्थि पंजर जो उम्र के पड़ाव में शिथिल हो चुके थे, में मानो बिजली सी कौंध गई और वह खाट से उठ खड़े हुए।

सुधा बैंक में काम करती थी। राहुल बड़े बाप का बेटा था और एमबीए पास था। अपने पिता के व्यापार को संभालता था। जिस बैंक में सुधा काम करती थी उनका सीसी लिमिट भी वहीं था। राहुल का अपने खाते के सिलसिले में बैंक में आना–जाना रहता था। इसी दौरान सुधा से उसका मेलजोल बढ़ गया। सुधा भी अपने आप को संभाल नहीं पाई। वह राहुल के प्रेम–पास में फंसती चली गई। बैंक के बाद वह राहुल के साथ बाहर समय बिताने लगी। पार्टियों में भी उसके साथ जाने लगी। देर रात तक घर लौटती थी और पिता के पूछने पर बैंक के काम में व्यस्तता का बहाना बना लेती, परंतु असलियत कहां छुपती है...।

महेश बाबू के मित्रों से रहा नहीं गया। इस प्रकार सुधा और राहुल का अप्रत्याशित मिलना जुलना उन लोगों से देखा नहीं गया। आखिर महेश बाबू एक प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। सरकारी नौकरी से सेवानिवृत्त थे। उनका परिवार अब सुधा में ही सिमट कर रह गया था। सुधा जब छोटी थी, पत्नी चल बसी। पत्नी के असमय वियोग से महेश बाबू टूट से गए थे। उनका अब एक ही उद्देश्य रह गया था कि किसी तरह बेटी को अच्छी शिक्षा देकर आत्मनिर्भर बनाए। आगे का फैसला सुधा पर छोड़ देंगे। ऐसा ही महेश बाबू का इरादा था। सुधा की शादी के लिए उन्होंने कभी सोचा ही नहीं। उन्हें अपनी बेटी पर इतना तो विश्वास था कि वह कभी कोई गलत फैसला नहीं लेगी। बेटी को पहले से ही छूट दे रखी थी कि वह अपनी जिंदगी को अपनी तरह से संवारेगी। उसे बता दिया था कि वह जहाँ चाहेगी शादी वहीं होगी। शादी के संबंध में निर्णय सुधा का ही अंतिम होगा। कोई दखलंदाजी नहीं करेगा।

बेटी शिक्षित होकर नौकरी में भी लग गई। सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा महेश बाबू ने सोचा था, पर दोस्तों की चेतावनी से अचानक उन्हें आघात पहुंचा। बेटी बड़ी हो चुकी थी। उसमें अच्छे बुरे की समझ थी। वह अपने फैसले पर कायम थे कि उनकी बेटी कभी गलत नहीं हो सकती। उसने अगर राहुल को चुना है तो सब कुछ ठीक ही होगा। बेटी को इस बारे में पूछना उन्हें उचित नहीं लगा, लेकिन मन ही मन परेशान थे कि कुछ गलत ना हो जाए। हुआ भी कुछ वैसा ही...।

राहुल बड़े मां बाप का एक बिगड़ैल बेटा था... अय्याश प्रवृत्ति का। जब महेश बाबू को अपने दोस्तों से यह जानकारी मिली तो उनको बहुत दुख हुआ। उन्होंने औरों से भी पता लगाया, बात सही थी। बेटी को समय पर इस बारे में आगाह कर देना उन्हें उचित लगा कि कहीं पानी सिर के ऊपर से ना बहने लगे। प्यार अंधा होता है। बेटी को तो जैसे भूत सवार था। वह यह सब मानने को कतई तैयार नहीं हुई। उसके साथ तो ऐसा कुछ हुआ ही नहीं जिससे शंका पैदा होती। उसे तो राहुल के चरित्र में कोई खोट का अहसास ही नहीं हुआ। दरअसल राहुल ने भी ऐसा कोई मौका ही नहीं दिया जिससे सुधा सशंकित होती।

एक दिन सुधा ने राहुल से शादी का प्रस्ताव दे डाला। राहुल मान तो गया पर उसने कहा बिजनेस जरा संभल जाए, इत्मीनान से धूमधाम से शादी कर लेंगे। इतनी जल्दी भी क्या है। किसी भी साधारण मनुष्य के लिए इस बात को समझना बिल्कुल भी मुश्किलदेह नहीं था, पर सुधा तो जैसे प्यार में अपनी सुध बुध खो बैठी थी। उसकी दिमागी हालत ऐसी नहीं थी कि इन बातों का सही अर्थ निकाल सके। राहुल के संबंध में उलझ सी गई थी, खोई–खोई सी रहने लगी। सुधा ने राहुल के साथ भागने के निर्णय से घर छोड़ दिया और सीधे राहुल के बताए हुए स्थान पर पहुंच गई। राहुल का वह निजी दफ्तर था। सुबह–सवेरे ही वहाँ पहुंच गई ताकि किसी को इसकी भनक भी न पड़े। वहाँ दरबान के अलावा कोई नहीं था।

"अरे सुधा तुम और यहां...? दरबान ने अचंभित होकर पूछा"

एक अनजानी सी जगह पर उसे कोई जानता है इस बात पर वह चौंक गई। दरबान कोई नहीं उसके बचपन का मित्र राजू था, जिसे वह भूल चुकी थी। उसने जब बचपन की बहुत सी बातें याद दिलाईं तब कहीं सुधा ने उसे पहचाना। गरीब होने के कारण उसकी पढ़ाई लिखाई नहीं हो पाई। घर पर तंगी का माहौल था। परिवार चलाना उसके पिता के बस की बात नहीं थी और तभी से वह छोटी–छोटी नौकरी कर अपने परिवार का भरण–पोषण करने में पिता का साथ देता आया है। सुधा ने अपना समझकर राजू को सारी बातें बताईं तो राजू को असलियत का अंदेशा हो गया। सचमुच राहुल एक अय्याश किस्म का बदमाश था जिसे पहचानने में सुधा से बहुत बड़ी गलती हो गई थी। राजू पिछले पाँच साल से वहाँ काम कर रहा था और उसके मालिक की सारी गतिविधियों से परिचित था। राजू ने सुधा को राहुल के बारे में सब कुछ बता कर सही समय पर किसी बड़े खतरे से उबार लिया। सुधा को अपनी गलती का एहसास हो गया। अपराध बोध से उसके कदम धीरे–धीरे घर की ओर बढ़ गए।

एक चिट्ठी छोड़कर जिस जोश से वह घर से बिना बताए भाग गई थी, उसका चेहरा अब फीका पड़ चुका था। वह सुबक रही थी। आंसू थमने का नाम ही नहीं ले रहे थे। अपनी गलती पर उसे पछतावा था। महेश बाबू ने अपनी बेटी सुधा को थाम लिया। उसे समझाया...

"सुबह का भूला अगर शाम को घर वापस आ जाए तो उसे भूला नहीं कहते"

शाखा सुभाष रोड, अलीगढ़
अंचल कार्यालय गुरूग्राम

पहले मुझे जीने तो दो

मैं कुछ कहना चाहती हूँ,
मुझे कोख में पलने तो दो ।
मैं सब कुछ कर सकती हूँ,
मुझे कुछ करने तो दो ।
मैं अम्बर में उड़ सकती हूं,
मेरे पंखों को बढ़ने तो दो ।
मैं पतझड़ में वसंत ला सकती हूँ,
मुझे खिलने तो दो।
मैं जग को रोशन कर सकती हूँ,
मुझे उगने तो दो ।
कस्तूरी–सा कर दूँगी जीवन,
मुझे महकने तो दो ।
तुम पर ममता बरसाऊँगी,
मुझे माँ बनने तो दो ।
हटा दूँगी सब बाधाएं पथ की,
कदम मिला कर चलने तो दो ।
तुम पर आँच न आने दूंगी,
काली बन कर लड़ने तो दो ।
मैं जी भर कर जीना चाहती हूँ,
पहले मुझे जीने तो दो....।

श्री प्रदीप वर्मा
अंचल कार्यालय बरेली

कार्टून कोना

पीयूष कुमार
अंचल कार्यालय लखनऊ

राजभाषा संगोष्ठी

05 जुलाई, 2021 को बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी महोदय की अध्यक्षता में राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. सुमीत जैरथ (आई.ए.एस.), सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार आमंत्रित थे। बैंक के समस्त आँचलिक प्रमुखों और राजभाषा अधिकारियों ने विडियो कॉफ्रेंसिंग के माध्यम से संगोष्ठी में भाग लिया। संगोष्ठी के दौरान श्री राजेश श्रीवास्तव, उप निदेशक (कार्यान्वयन) और श्री विक्रम सिंह सोढ़ी, सहायक निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा क्रमशः स्मृति आधारित अनुवाद टूल 'कंठस्थ' व 'हिंदी प्रवाह लीला' पर प्रशिक्षण सत्र भी लिया गया। प्रस्तुत है कार्यक्रम से संबंधित छायाचित्र।

कृत्रिम सुख के बजाय ठोस उपलब्धियों के पीछे समर्पित रहें। – डॉ. ए पी जे अब्दुल कलाम

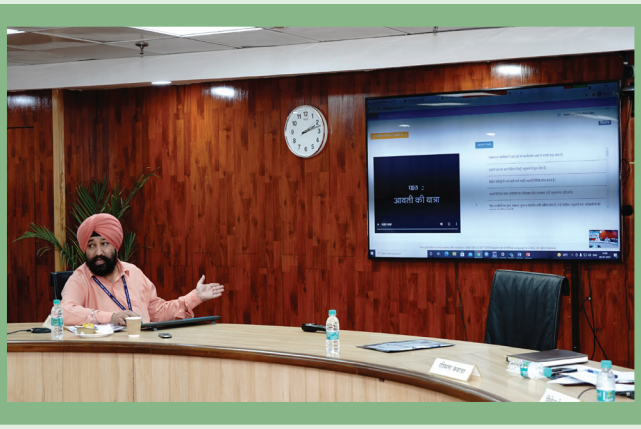

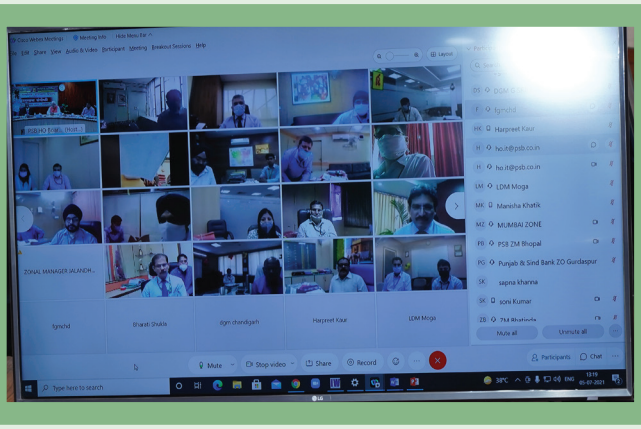

रवि मेहरा

गोपाल कृष्ण
असित श्रीवास्तव

तथा
PREMIER

काव्य–मंजूषा

मन

वैभव कुमार मिश्र

किसी ने कहाँ कभी मन की मानी है
आज के समय यही तो इंसान की कहानी है
मन ने जो चाहा, उसे हमेशा दबाया
वक्त ने जो चाहा, उसने वहीं करवाया
समय का कुछ अजीब चक्र है
उसे अपने पर बड़ा फक्र है
सभी ने परिस्थितियों के हिसाब से चलने की ठानी है
इसीलिए किसी ने कहाँ कभी मन की मानी है।

मन हमेशा चीखता है, समझाता है हर एक परिस्थिति में
बड़ी हसरत है मन की भी उसके इकलौते जीवन में
जरा झाँककर तो देखो तुम अपने अन्तर्मन में
उदास होगा वो तुमसे इस जीवन में
वक्त आएगा एक दिन जब तुम कहोगे
चाहता मैं कुछ और था इस बात पर रोओगे
किसी ने कहाँ कभी मन की मानी है

देखे थे बड़े उसने एक रात सपने
होंगे कभी एक दिन वो सारे अपने
फंस गए वो सारे एक दिन वक्त के जंजाल में
मन सोंचकर रह गया मैं आया क्यों इस संसार में
मारकर मन को हमेशा जीवन में सुख–शांति नही
तू वक्त का एक गुलाम है, क्या? मन से कोई संबंध नही
किसी ने कहाँ कभी मन की मानी है
वक्त ने अपने आगे उसकी एक न सुनी है

अंचल कार्यालय बरेली

हिंदी में ही काम करें

पूजा शर्मा

पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, सुबह दोपहर शाम करें,
हिंदी में बोलें बतियाएं, हिंदी में ही काम करें।

तुलसी, सूर, कबीर, जायसी के आंगन में खेली है,
मीरा और महादेवी की हिंदी सखी सहेली है,
घनानंद के शवभूषण ने इसका रूप निखारा है,
खुसरो और नसीर ने हिंदी का लावण्य निखारा है,
पंत, प्रसाद, निराला के सपनों को ललित ललाम करें,
हिंदी में बोलें बतियाएं, हिंदी में ही काम करें।

एक निशान हो एक प्रधान हो, एक हो संविधान अपना,
बिना राष्ट्र भाषा के लेकिन, रहे अधूरा ये सपना,
हिंदी पूरे देश को जोड़ने वाली एक कड़ी है जो,
सब भाषाएं छोटी बहिनें, हिंदी बहिन बड़ी है जो,
बोल, चाल, व्यवसाय और व्यवहार इसी के नाम करें,
हिंदी में बोलें बतियाएं, हिंदी में ही काम करें।

हिंदी हिंदुस्तान की भाषा, देवनागिरी लिपि है इसकी,
संस्कृत की बेटी, सर्वाधिक वैज्ञानिकता है इसकी,
पढ़ना, लिखना, कहना, सुनना एक रूप है हिंदी में,
मन के भावों की छलकन की गूंज है बिंदी–बिंदी में,
अपनी भाषा, अपनी बोली को ही प्रथम प्रणाम करें,
हिंदी में बोलें बतियाएं, हिंदी में ही काम करें।

अंचल कार्यालय गुरुग्राम

अविचारशील मनुष्य दुःख को प्राप्त होते हैं। – ऋग्वेद

रीना

प्यारी मैं

कहाँ चली गयी हो तुम,
ढूंढती हूँ बेसब्र होकर हर तरफ
सूने तपते से जीवन में थी जैसे चांदनी तुम,
याद बहुत आती हैं वो बरसातें,
आंगन में घुँघरू पहन नाचती तुम,
त्यौहारों पे दीवारों पे
हल्दी के हाथ छापती तुम।
भाईयों से लड़ती कभी,
कभी उनकी सलामती के,
उनकी कलाई पर धागे बांधती तुम।
माँ से नए कपड़ों के लिये लड़ती,
तो कभी उन्ही की पुरानी साड़ी पहन सजती तुम,
पापा की प्यारी राजदुलारी,
तो कभी उन्हीं से डॉट खा कर हँसती तुम,
बुआ चाची की नटखट,
तो कभी दादी माँ भी बनती तुम
भाभी और सखी सहेलियों में कहाँ छुपती तुम।
स्कूल की हीरोइन, ऑफिस की शान तुम
बच्चों का प्यार और पति का अभिमान तुम
तुम बिन जीवन बेकार लगता है
तुम बिन सूना ये संसार लगता है।
कहाँ गुम हो गयी तुम
कहाँ गुम हो गयी हो तुम,
भाई के 'अकेली बाहर नहीं जाओ' से डर गई
या मम्मी के 'कुछ घर का काम भी सीख लो' से डर गई
शादी के लिए लड़का ढूंढते–ढूंढते थके पापा के वजूद से डर गई
या बुआ चाची के 'न जाने इस लड़की का क्या होगा' से डर गई
सखियों की 'तेरा अब तक कुछ न हुआ' से डर गई
या बच्चों की 'आपके पास तो
हमारे लिए समय ही नहीं है' से डर गई
ससुराल वालों के 'नौकरी वाली घर नहीं सम्हाल सकती' से डर गयी
या ऑफिस वालों के 'लड़कियाँ कभी
लड़कों की बराबरी नहीं कर सकती' से डर गई।
कहीं ऐसा तो नहीं, इन सब से डर डर कर तुम मर गयी,
नहीं मैं मर नहीं गयी लेकिन हाँ,
सबके हिसाब से सुधर गयी।
जी रही हूँ इस तरह जैसे आत्मा मेरी मर गयी।
उन सबकी इच्छाओ में कैद कर दिया उसे, जिसे तुम ढूढती हो।
लगा दिए पहरे, वो जो है वो न रहे,
सबके जैसी बन जाये ,अलग न रहे।
उसे ये होना नहीं भाता फिर भी होना होगा,
अपना वजूद भी इसके लिए खोना होगा।
लेकिन तुम निराश न हो, ,
एक दिन 'वो' आजाद होगी आस न खो।
जब सबकी उम्मीदें पूरी हो जायेंगी उससे
जब सारी जिम्मेदारियों से वो मुक्त हो जाएगी।
एक दिन सब भूल जाएंगे उसे और तब फिर से वो खुद को पायेगी।
फिर से उड़ेगी आसमान में, बारिश में भीग कर गाने गायेगी।
खुद के वजूद से पहचानी जाएगी।
पर सच कहना वो दिन आयेगा ना
सच कहना ऐसा हो पायेगा ना।
तब तक
रहने दो उसे बन्धनों में और मजबूत बनने दो।
सहने दो सबकुछ बिना कुछ बोले और एक अच्छी कामयाब औरत
बनने का दिखावा करने दो।
प्यारी 'मैं' जल्दी ही तुमसे मिलूँगी
गले लग कर सारे सुख दुख सुनूँगी।
सारे गिले शिकवे मिटा लेना
मुझे अब तक दूर रहने की सजा देना।
कह लेना मुझसे जो अब तक किसी से न कह पायी हो
वो दुख भी बाँटना जो न जाने कैसे सह पायी हो।
प्यारी 'मैं' जल्दी ही तुमसे मिलूँगी

मिलते हैं जल्दी ही...

प्रधान कार्यालय
आरटीजीएस/एनईएफटी सर्वर टीम

बैंक के क्षेत्रीय महाप्रबंधक कार्यालय चंडीगढ़ तथा विभिन्न

क्षेत्रीय महाप्रबंधक कार्यालय चंडीगढ़

अंचल कार्यालय अमृतसर

अंचल कार्यालय कोलकाता

अंचल कार्यालय दिल्ली–I

अंचल कार्यालय गुरूग्राम

अंचल कार्यालय पटियाला

अंचल कार्यालय दिल्ली–II

जीवन में आनंद को कर्तव्य बनाने की अपेक्षा कर्तव्य को आनंद बनाना अधिक महत्वपूर्ण है। – अज्ञात

अंचल कार्यालयों में हिंदी पखवाड़े व हिंदी दिवस का आयोजन

अंचल कार्यालय बरेली

अंचल कार्यालय लखनऊ

अंचल कार्यालय लुधियाना

अंचल कार्यालय नोएडा

अंचल कार्यालय बठिंडा

सहभागी

अंचल कार्यालय गुरदासपुर

बिभाष कुमार

बैड बैंक की स्थापना के बाद बैंकों पर उसके पड़ने वाले प्रभाव

बैड बैंक की स्थापना करके भारत सरकार ने वित्तीय क्षेत्र खासकर बैंकिंग क्षेत्र हेतु एक ऐतिहासिक पहल की है। प्रथम दृष्टया इसके नाम को सुनकर हमें कुछ आश्चर्य लग सकता है। नाम तो अवश्य इसका बैड है परंतु इसके काम आर्थिक जगत खासकर बैकिंग जगत के लिए अच्छे होने वाले है। बैड बैंक की अवधारणा और इनके इतिहास पर चर्चा करने से पूर्व वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता क्या है इस पर चर्चा करेंगे।

विश्व अभी कोविड–19 के कुप्रभाव से जूझ रहा है। विश्व अर्थव्यवस्था को जितना नुकसान समय –समय आए आर्थिक मंदी के कारण हुआ होगा उससे कहीं ज्यादा कोविड–19 के कारण हुआ है। पिछले लगभग छह तिमाही से कोविड–19 संकट से हम लोग जूझ रहे है। जिसके कारण वैश्विक स्तर पर आर्थिक विकास में गिरावट देखने को मिल रहा है। टीका बनने से पूर्व कोविड–19 के बचाव एवं रोकथाम हेतु लॉकडाउन को एक मात्र विकल्प के तौर पर देखा गया है। लॉकडाउन के दौरान आवश्यक सेवाओं से जुड़ी चीजों को छोड़ अन्य सभी प्रकार के आर्थिक गतिविधियों के बंद रहने के कारण अर्थव्यवस्था को काफी नुकसान पहुंचा है। पिछले वर्ष लगाए गए पहले लॉकडाउन के कारण अर्थव्यवस्था विकास की दर ऐतिहासिक नकारात्मक स्तर तक पहुंच गया था। अर्थव्यवस्था के सेहद का असर बैंकिंग क्षेत्र पर भी पड़ना लाजमी है क्योंकि दोनों के बीच परस्पर अन्योन्याश्रित संबंध है। अर्थव्यवस्था में किसी भी कारण से हुए मंदी के संकेत से बैंकों की सेहत पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। भारतीय रिजर्व बैंक के जुलाई 2021 में आए वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट में अनुमान व्यक्त किया गया है कि सकल गैर निष्पादित आस्तियां मार्च 2021 की तुलना में मार्च 2022 तक 7.48 प्रतिशत से 9.80 प्रतिशत तक बढ़ जाएगी। अर्थात् आने वाले समय में बैंको का एनपीए बढ़ने ही वाला है।

जैसे कि हम सभी अवगत है कि कोविड–19 के कारण बैंकिंग क्षेत्र के तनाव को और बढ़ा दिया है इसलिए बैंकों की गैर निष्पादित आस्तियों की स्थिति को पूर्व की स्थिति में करने के लिए बजट वर्ष 2021–22 में बैड बैंक को मूर्त करने की परिकल्पना की गई। एनपीए की समस्या के समाधान हेतु एक उपाय के तौर पर राष्ट्रीय बैड बैंक स्थापित करने का विचार प्रस्तावित किया गया है। हालाँकि बैड बैंक का विचार देश में कई वर्षो से था परंतु कई कारणों से यह मूर्त नहीं हो पा रहा था। 16 सितंबर 2021 को कैबिनेट की संस्तुति के बाद वित्तमंत्री ने ₹30,600 करोड़ के प्रारंभिक पूंजी के साथ बैड बैंक की स्थापना का सशक्तिकरण किया है।

बैड बैंक क्या है? साधारण भाषा में अगर समझने की कोशिश करें तो बैड बैंक एक ऐसा बैंक है जो बैंकों के खराब हो चुके ऋण या कहें एनपीए के एग्रीगेटर के रूप में कार्य करता है और उन्हें बैंकिंग क्षेत्र से रियायती मूल्य पर खरीदता है, फिर उनके पुनर्भरण और समाधान की दिशा में काम करता है। बैड बैंक एक परिसंपत्ति पुनर्निर्माण कंपनी (एआरसी) के समान है, जहाँ वह बैंकों से इन ऋणों को स्थानांतरित करते हुए अधिकतम संभव राशि वसूलने का प्रबंधन करता है। बजट 2021 में एक परिसंपत्ति पुनर्निर्माण कंपनी और परिसंपत्ति प्रबंधन कंपनी (एएमसी) की संरचना का प्रस्ताव किया गया था, जिसमें परिसंपत्ति पुनर्निर्माण कंपनी (एआरसी) ऋण एकत्र करेगा, जबकि परिसंपत्ति प्रबंधन कंपनी (एएमसी) एक संकल्प प्रबंधक के रूप में कार्य करेगा। बीते कई सालों से विभिन्न बैंक अपने एनपीए की वसूली से जूझ रहे हैं जिसके कारण वे ऋण देने में ध्यान नहीं दे पा रहे हैं। इससे उनके ग्रोथ पर असर पड़ रहा है। बैड बैंक बनने से उनकी व्यवस्था में सुधार आएगा।

बैड बैंक, एक आर्थिक अवधारणा है जिसके अंतर्गत बढ़ते एनपीए के कारण बैंको को आर्थिक संकट या घाटे में चल रहे बैंकों द्वारा अपनी गैर निष्पादित आस्तियों को एक नए बैंक को स्थानांतरित कर दिया जाता है। बैंकों को इससे क्या और कितना फायदा होगा। जब किसी बैंक की गैर निष्पादित अनियंत्रित या निर्धारित मापदंडों से अधिक हो जाती है तब सरकार के आश्वासन पर एक ऐसे बैंक

अभिलाषा तभी फलदायक होती है जब वह दृढ़ निश्चय में परिणित कर दी जाती है। – स्वेट मार्डेन

का निर्माण किया जाता है जो संबंधित सभी बैंकों की एनपीए खरीद लेता है। बैड बैंक की शुरुआत 1980 के दशक में अमेरिका में हुई थी। अमेरिका में बैड बैंक के सफल प्रयोग के होने के उपरांत 1990 के दशक के दौरान यूरोपीय देश स्वीडन, फिनलैंड में इस तरह की प्रक्रिया द्वारा आर्थिक चुनौतियों का सामना किया।

इसके उपरांत 2011 में बेल्जियम और 2012 में स्पेन ने भी आर्थिक संकट के दौरान ऐसे ही बैंकों का सहारा लिया है। 1997– 98 में पूर्व एवं दक्षिण पूर्व एशियाई देशों मलेशिया, इंडोनेशिया में आए मुद्रा के उपरांत बैड बैंक की स्थापना की गई थी। लगभग पांच दशक बाद इसे भारत में स्थापित करने की नौबत क्यों आई सबके मन में यह सवाल उठ रहा है। ध्यान रहें कि इन बैड बैंकों को 10 से 15 वर्ष की समय सीमा दी गयी है क्योंकि सरकारों द्वारा एनपीए की समस्या से दवाबग्रस्त बैंकों को निर्धारित अवधि में लाभ में लेकर आना प्राथमिक जिम्मेदारी बनती है अन्यथा बैंकों का बड़ा नुकसान हो सकता है।

बैंड बैक एक तरह की एसेट रिकंस्ट्रक्शन कंपनी (एसीआर) है जिसका काम बैंक से उनके दबावग्रस्त कर्ज यानी गैर निष्पादित आस्ति (एनपीए) को खरीदना या टेकओवर करना होता है। साधारण शब्दों में कहें तो किसी भी बैंक के खराब संपत्ति को कार्यशील पूंजी में बदलना है। दरअसल, बैंक किसी व्यक्ति या संस्था को ऋण प्रदान करती है, लेकिन जब व्यक्ति या संस्था इस ऋण को चुकाने में असमर्थ हो जाती है या फिर वह लंबे समय से किस्त देने बंद कर देता है, तो बैंक द्वारा उसे खराब कर्ज या एनपीए मान लिया जाता है।

वैसे देखा जाए तो कोई भी बैंक अपने पास ऐसा खराब कर्ज रखना नहीं चाहती हैं, क्योंकि इससे उनकी बैलेंस शीट खराब होती है। साथ ही ऐसी स्थित में बैंक नए कर्ज देने में भी सक्षम नहीं रह पाता है। लिहाजा, बैड बैंक इसी बुरे कर्ज को बैंकों से ले लेगा, जिसके बाद वह इन खातों में वसूलने की कोशिश करेगा।

बैंड बैक कई चरण में लगभग दो लाख करोड़ रुपए के खराब ऋण लेगी। उसे पहले चरण में ₹500 करोड़ से ज्यादा के कुल ₹90,000 करोड़ के खराब ऋण दिए जाएंगे। बैंड बैक बैड लोन की कीमत 15 प्रतिशत नकद और बाकी 85 प्रतिशत सरकारी बॉन्ड के रूप में देगा।

वर्तमान समय में कुल 39 डीआरटी और 26 एसेट रीकंस्ट्रक्शन कंपनी कार्य कर रही है तो उसके बाद यह प्रश्न उठता है कि बैंड बैक की जरूरत क्यों महसूस हुई? जवाब होगा कि फिलहाल देश में 39 डीआरटी, 26 एसेट रिकंस्ट्रक्शन कंपनियां कार्यरत हैं, जो खासतौर पर छोटे एवं मध्यम आकर के फसे ऋण हैंडल करती रही हैं। लेकिन जब बड़े और पुराने बैड ऋण को मैनेज करने के लिए अतिरिक्त विकल्प की जरूरत थी तो बैंड बैक के गठन के अलावा कोई दूसरा विकल्प नहीं बचा था। यही वजह है कि वित्तीय वर्ष 2021–22 के बजट में भारत सरकार ने बैड बैंक बनाने का ऐलान किया था।

बैड बैंक से हमारी अपेक्षा काफी है। बैड बैंक के स्थापना के बाद ऐसा भी अगर हम अपेक्षा रखते हो कि बैंकों के सारे एनपीए खत्म हो जाएंगे यह बेईमानी होगी। बैंड बैंक कोई जादू नहीं है परंतु इसके स्थापना के बाद बैंकों को बैलेंस शीट को साफ करके एनपीए और टीडब्ल्यूओ खाते जिसमें बैंकों को किसी प्रकार के कोई रिकवरी की संभावना खत्म हो गई हो वैसे बड़े खातों में पैसा आने की संभावना जीवित हो गई है। देखा जाए तो बैंको के फसे बड़े ऋणों की वसूली का यह तीसरा और शायद अंतिम प्रयास है। पहले प्रयास के अंतर्गत एसेट रिकंस्ट्रक्शन कंपनियों के माध्यम से फसे कर्ज का 26 प्रतिशत वसूली कर सकी थी। दूसरे प्रयास के अंतर्गत दिवालिया कानून के अंतर्गत 21 प्रतिशत फसे कर्ज की वसूली की गई है। 31 मार्च 2021 तक बैंको के कुल फसे कर्ज को देखेंगे तो यह ₹ 8 लाख 34 हजार करोड़ का बैठता है। अर्थात् बैड बैंक प्रारंभ में इसी में से ₹ 2 लाख करोड़ ऋण की वसूली करेंगे। बैंको को अपने इस ₹ 2 लाख करोड़ के फसे ऋण में से लगभग 18 प्रतिशत राशि प्राप्त होने की संभावना है।

विदेशों में अभी तक स्थापित बैड बैंको का अध्ययन करने पर हम पाते है कि स्वीडन में स्थापित बैड बैंक सेक्यूरम ने सबसे अधिक 86 प्रतिशत तक डूबे कर्जो की वसूली की थी। एशियाई मुद्रा संकट के समय मलेशिया के बैड बैंक दानहर्ता 58 प्रतिशत, कोरियाई बैंक 60 प्रतिशत, थाईलैंड 46 प्रतिशत और इंडोनेशिया में स्थापित बैड बैंक अपने फसे कुल कर्ज का 26 वसूल कर सकी थी। इस दृष्टि से देखने पर हमें बैड बैंक से अपेक्षा काफी अधिक है। सबसे उच्च वसूली के आंकड़ों की बराबरी न करते हुए सबसे न्यूनतम वसूली के आंकड़ों तक अगर हम इस बैंक के माध्यम से पहुँच सके तो यह भी बैंकिंग जगत के लिए काफी लाभकारी सिद्ध होगा। तनावग्रस्त परिसंपत्तियों को बैड बैंकों में स्थानांतरित करने से नकदी में 15% और संप्रभु गारंटीशुदा सुरक्षा प्राप्तियों में 85% की वसूली होगी। इसमें सरकार द्वारा निश्चित समय के लिए शून्य–जोखिम भार की गारंटी दी जाती है। बैंकों के बैलेंसशीट पर पड़ेगा। बैंकों का मुनाफा बढ़ेगा और बाजार में और अधिक ऋण देने की स्थिति में होगा जिससे अर्थव्यवस्था को पुनः गति मिल सकेगी।

स्टाफ प्रशिक्षण महाविद्यालय रोहिणी, नई दिल्ली

अर्नब मुखर्जी

मूल बांग्ला लेख

हाईलि सासपिशास

ফেলুদার কাছে আবার হারলাম দাবায়। অবশ্য এর উল্টোটা হলেই অবাক হওয়ার কারণ ছিল। ফেলুদা বলে মগজাস্ত্র নিয়ে যাদের কারবার, তাদের জন্য দাবা খেলাটা ভিটামিনের কাজ করে, প্রতিপক্ষের চাল আগে থেকে অনুমান করে, তাকে কাত করার মজাই আলাদা। রবিবার সকালে আমাদের 21 রজনী সেন রোডের বাড়ির বৈঠকখানায় বসে ছিলাম ফেলুদা আর আমি। আজকাল রোজ দিনই রবিবার মনে হয়। করোনা, লকডাউনের জেরে ফেলুদার মক্কেল আসা একেবারে বন্ধ, রোজগার শিকেয় উঠেছে। তাই নিয়ে ফেলুদাকে বেশ চিন্তিত মনে হলেও বাইরে সেরকম প্রকাশ করে না।

এই দীর্ঘ অবসরে ও দাবা নিয়ে মেতেছে। আর ফেলুদা একবার যে বিষয়ে আগ্রহী হয়, তাতে রীতিমতো পারদর্শী হয়ে তবেই ছাড়ে, দাবাও বোধকরি সেই তালিকায় অন্তর্ভুক্ত হতে চলেছে। দাবা নিয়ে ইতিমধ্যে দুটি বই পড়ে ফেলেছে, প্রখ্যাত দাবাড়ু অ্যরন নিমজোউচের লেখা, মাই সিস্টেম আর র্জামান হ্যরমান গ্রুটেনের চেস স্ট্রাটেজি ফর ক্লাব প্লেয়ার্স।

একটা চারমিনার ধরিয়ে ফেলুদা বললো, " জানিস তোপসে, সব খেলার মতো দাবাতেও অ্যাটাকের মতো ডিফেন্সটাও জরুরী।গ্যারি কাসপারভ যদি সর্বকালের সেরা দাবাড়ু হন, তাহলে টিগরান পেট্রোশিয়ান দাবার ইতিহাসে সেরা ডিফেন্ডার। ভদ্রলোক তার ডিফেন্সিভ স্ট্যাটেজির জন্য সেরকম নাম করতে পারেনি, উল্টে বোরিং, ভীতু ইত্যাদি অনেক তকমা তাকে দেওয়া হয়েছিল, কিন্তু অস্বীকার করার উপায় নেই, উনি দাবায় এক নতুন পথ দেখিয়েছিলেন এবং উনিও কিন্তু ওয়ার্ল্ড চ্যাম্পিয়ন ইন হিস ওন রাইট। ওনার স্টাইলের সাথে ইতালির ফুটবলের কিংবদন্তি ক্যাতেনেচ্চিও সিস্টেমের তুলনা চলে, যেখানে ডিফেন্স আঁটোসাঁটো রেখে, প্রতিপক্ষের আক্রমণ ভোঁতা করে তাকে বিরক্ত করা হয় এবং তারপর তার সামান্যতম ভুলের সুযোগে পাল্টা আক্রমণে তার উপর ঝাঁপিয়ে পরা হয়। "

কথা শেষ করে ফেলুদা খবরের কাগজে সবে মন দিয়েছে ওমনি হোয়াটসঅ্যাপে লালমোহনবাবুর ভিডিও কল এল। করোনা মহামারীর দয়ায় লালমোহনবাবুর আমাদের বাড়ি আসা একেবারে বন্ধ হয়ে গেছে। বেচারা গড়পারের বাড়িতে একেবারে বন্দি। তাই ওনার ভাষায় দুধের স্বাদ ঘোলে মেটানোর চেষ্টা করেন, ভিডিও কলের মাধ্যমে। এবার গ্রীষ্মে উনি আমাদের সাথে লাদাখ যাওয়ার পরিকল্পনা করছিলেন, লাদাখের পটভূমিকায় এবারের পূজাবার্ষিকী উপন্যাসটি উতরে দেওয়ার কথা ভেবে রেখেছিলেন। নামও একটা ভেবে রেখেছিলেন,

লাদাখে লঙ্কাকাণ্ড, তবে ফেলুদা এই নাম শোনার সাথে সাথেই বাতিল করে দিয়েছিল, বলেছিল, লাখাদের সাথে লঙ্কা একদমই মানাচ্ছে না বরং লাদাখে লুটপাট চলতে পারে। ফেলুদা কল রিসিভ করাতে, ওপাশ থেকে লালমোহনবাবু বললেন, "কি ফেলুবাবু কি করছেন? " ফেলুদার উত্তর দেওয়ার আগেই উনি বলে চললেন, " আমার হোয়াটসঅ্যাপ স্ট্যাটাসটা দেখেছেন? " আমি মোবাইল বের করে দেখলাম, লালমোহনবাবু স্প্যানিশ ওমলেট বানিয়েছেন, আর খুব যত্ন করে তার ছবি তুলে স্ট্যাটাসে দিয়েছেন। ছবিটা ফেলুদাকে দেখাতে, ও বলল "বাহ্ খাসা বানিয়েছেন তো! " রহস্যরোমাঞ্চ ঔপন্যাসিক লালমোহন গাঙ্গুলী ওরফে জটায়ুকে কর্মহীন লকডাউনের বাজারে রান্না করার নেশায় পেয়েছে। এতদিন দিশি পোলাউ মাংস, মাটনের ঘুঘনি, ফিশফ্রাই দিয়ে কাজ সারছিলেন, আজ নিজেকে আন্তর্জাতিক স্তরে নিয়ে গেলেন। ফেলুদা আর আমি কিছুক্ষন আগে মুড়ি ছোলা সেদ্ধ আর লাল চা দিয়ে প্রাতরাশ করেছি। রবিবার সকালে হিং এর কচুরি আর আলুরদমের বদলে, এরকম হওয়ার কারণ, শ্রীনাথ লকডাউনের কয়েকদিন আগে বউয়ের শরীর খারাপ বলে দেশের বাড়ি গেছিল, তারপর লকডাউন ঘোষণা হয়ে যাওয়ায় আর ফিরতে পারেননি। আর তাতে আমরা পড়েছি মহাফাঁপড়ে। রান্নার প্রসঙ্গে ফেলুদা বলে, "এই ব্যাপারে ফেলু মিত্তিরও ফেল রে তোপসে"। তার উপর ঘর পরিস্কার, কাপড় কাচা সব মিলিয়ে নাজেহাল অবস্থা। ফেলুদা বলে, " সহজাত অভ্যাসবসত যা যা আমাদের কাছে টেকেন ফর গ্র্যান্টেট ছিল আজ তার প্রতিটার মূল্য বোঝার সুযোগ দিয়েছে পরিস্থিতি। " লালমোহনবাবু বললেন, "কি কেমন দিলাম, মশাই! স্প্যানিশ ওমলেট বা এসপানিওলে বললে, টোরটিলা ডে পোটাটোস। আপনাকে আর তোপসে ভায়াকেও খাওয়ানোর খুব ইচ্ছা ছিল, কিন্তু কি আর করা যাবে! "

ফেলুদা বলল, " ঠিক আছে, সে হবে না হয়। কিন্তু এবার থেকে উচ্চারণ টা শুধরে নেবেন, ওটা টোরতিয়া দে পাতাতাস।"লালমোহনবাবু এবার একটু দমে গিয়ে বললেন, "যা বললেন তা বোধহয় আমার বাংলা জিভে আর নামলো না। "

ফেলুদা এর কোনো উত্তর না দিয়ে আমার দিকে তাকিয়ে বলল, " জানিস তোপসে, এই টোরতিয়া দে পাতাতাস কিভাবে এল তার অনেক গল্প শোনা যায়। তার মধ্যে সবচেয়ে বেশি যেটা গ্রহণযোগ্য সেটা হল এরকম; সাল 1835 এর কাছাকাছি, স্পেনে তখন গৃহযুদ্ধের আগুনে জ্বলছে, স্প্যানিশ কার্লিস্ট বাহিনী স্বাধীন বাস্কে কান্ট্রি আক্রমণ করেছে। সেই সময় একদিন কার্লিস্ট জেনারেল থোমাস দে জুমালাসিয়ারেহুই ক্লান্ত ও ক্ষুদার্ত হয়ে এক অজ্ঞাত গ্রামের খুবই সাধারণ এক বাড়িতে আশ্রয় নেন। সেই বাড়ির মহিলা তাকে টোরতিয়া খেতে দেন, টোরতিয়াতো জানিসই তোপসে, গোদা বাংলায় বললে স্প্যানিশ রুটি। তবে জেনারেল খেয়ে বুঝলেন, সেটি ডিম দিয়ে বানানো এবং অতি সুস্বাদু। তিনি সেই টোরতিয়ার রেসিপি শিখে এসে, তার সৈনিকদের বানিয়ে খাওয়াতে শুরু করলেন যেহেতু খুব তাড়াতাড়ি সহজে বানানো যায় এবং স্বাদও অসামান্য তাই এটি রাতারাতি হিট হয়ে গেল। বিখ্যাত হয়ে গেলেন জেনারেল থোমাস দে জুমালাসিয়ারেহুই স্প্যানিশ ওমলেটের আবিষ্কর্তা হিসাবে, সেই গ্রাম্য মহিলাটির নাম কেউ জানলো না। "ওপাশ থেকে লালমোহনবাবু প্রায় লাফিয়ে উঠে বললেন, " আরিব্বাস, এ যে সিনেমার গল্প মশাই। "

ফোনটা রেখে ফেলুদা আর এক রাউন্ড চা বানিয়ে নিয়ে এল। তার মধ্যেই আবার ফোনটা প্রবল উৎসাহে বেজে উঠল। ফেলুদা এমনিতে ফোনে বেশি কথা বলা পছন্দ করে না তাই বিরক্ত হয়ে ফোন টা তুলে নিল। ফেলুদার ভ্রূকুটির কারণটা বুঝলাম ওর মোবাইলের স্ক্রিনের দিকে তাকিয়ে, একটা অচেনা নাম্বার, ট্রুকলারে দেখাচ্ছে, এম. মেঘরাজ নিচে মুম্বাই, মহারাষ্ট্র। ভারী ইনট্রেসটিং। ফেলুদা কল রিসিভ করে হ্যালো বলল।

ওদিক থেকে চেনা কণ্ঠে শোনা গেল, "নমস্তে মিঃ মিটার, কেমন আছেন? হামাকে চিনতে পারলেন কিনা? "ফেলুদা জবাব দিল, "হ্যাঁ নিশ্চয়, আমি ভালই আছি। আপনি হঠাৎ এই সময়ে কি দরকারে ফোন করলেন সেটা বলুন।"

মগনলাল শান্ত স্বরে বললেন, " মিত্তির বাবু, আপনি হামাকে শত্রুই ভাবেন, আমি যেন আপনার লাইফের প্রোফেসর মোরিয়াতি। আমি কিন্তু সবসময় আপনাকে আমার ফ্রেন্ডই মনে করি। তাই এই দুঃসময়ে আপনাদের খবর নিতে কল করলাম। সাবধানে থাকবেন। "ফেলুদা একটু ব্যাঙ্গের সুরে বলল, " আবার প্রয়োজনে এই ফ্রেন্ডকে মারার জন্য লোক পাঠাবেন তাইতো? কোলকাতা হোক বা কাঠমান্ডু বা বেনারস, কোথাও তো পিছু ছাড়েননি মশাই। "মগনলাল বললেন, " এইটা কিন্তু ভুল বললেন, পিছু তো আপনি আমার করে এসেছেন, আমার সব ব্যবসা মাটি করেছেন। যাক যা হয়ে গেছে তা পাস্ট কি বলেন? হামি এখন কমপ্লিটলি চেঞ্জেড পারসন বিশ্বাস কোরেন। তার জন্য আমি কিন্তু আপনাকেই ক্রেডিট দিই। সেই যে আপনি গোলাপি মুক্তা কেসে আমাকে পুলিশে পাকড়ে দিলেন, তার পরেই আমি ডিসাইড করলাম, অনেক হয়েছে, এনাফ, বয়সও হচ্ছে, এই জালিয়াতি, স্মাগলিং এবার ছেড়ে দেব। অ্যাই অ্যাম রিয়ালি গ্রেটফুল টু ইউ মিঃ মিটার। তোপসে ভাইকেও আমার ওয়েল উইসেজ জানাবেন। আর লালমোহানবাবু কে বলবেন উনাকে আমি যা তকলিভ দিয়েছি তার জন্য আমি সরি।"ফেলুদা এসব কথা সম্পূর্ণ অগ্রাহ্য করে প্রশ্ন করল, "তা হঠাৎ মুম্বাই কি মতলবে? "

মগনলাল এই প্রশ্নে বিন্দুমাত্র অবাক না হয়েই বলল, "সেটাই তো বলতে যাচ্ছিলাম আপনাকে, জেল থেকে বেরোনোর পর ঠিক করলাম ফিল্ম প্রোডাকশন কোম্পানি খুলব, সেই জন্যেই মুম্বাই। বাট কি জানেন মিঃ মিত্তির বাজারে তো আমার অনেক দুর্নাম, আপনি তো সবই জানেন, তাই এই ব্যবসায় ফায়দা হল না । তারপরতো করোনা মহামারী এসে গেল, মুম্বাই তে সবচেয়ে বেশি। তাই নতুন ব্যবসা শুরু করলাম, ফেস মাস্ক আর স্যানিটাইজারের। মিথ্যা বলবোনা মিঃ মিত্তির ভালই প্রফিট হচ্ছে।" ফেলুদা কিছু একটা বলতে যাচ্ছিল, কিন্তু মগনলাল মেঘরাজ বলে চললেন, " ও ভালো কথা, আমরা কলকত্তাতেও সাপ্লাই দি, দরকার লাগলে একবার ফোন করে দিবেন, সাথে সাথে লোক গিয়ে দিয়ে আসবে আপনার বাড়িতে। আপনার জন্য কোম্পানির রেটই, এক পাইসাও এক্সট্রা নেবো না। আর আঙ্কেলকে বলবেন উ স্যানিটাইজারে বিষ নাই! "পরে জটায়ু সব শুনে নিজের স্বভাবসিদ্ধ ঢংয়ে বললেন, " হাইলি সাসপিশাস। "

অंचल कार्यालय गुवाहाटी

पल्लव दत्ता

हाइली सस्पीशियस

(मूल बांग्ला लेख का हिंदी अनुवाद)

मैं शतरंज में फिर फेलुदा से हार गया। बेशक, अगर इसके विपरीत हुआ तो आश्चर्यचकित होने का कारण था। फेलुदा का कहना है कि दिमाग का काम करने वालों के लिए शतरंज खेलना विटामिन का काम करता है, प्रतिद्वंद्वी की चाल का पहले से अंदाजा लगा लेने का मजा ही अलग है। फेलुदा और मैं रविवार की सुबह हमारे 21, रजनी सेन रोड स्थित घर के लिविंग रूम में बैठे थे। आजकल तो हर दिन रविवार लगता है। कोरोना तालाबंदी के कारण फेलुदा के मुवक्किल नहीं आ रहे हैं जिससे उनकी रोजी–रोटी बंद हो गई है। फेलुदा इसके बारे में तो काफी चिंतित सा लगता है लेकिन इसे बाहर इस तरह व्यक्त नहीं करता।

यह एक सेवानिवृत्ति जैसा है जिससे वह शतरंज में दिलचस्पी लेने लगा है और एक बार फेलुदा जिस चीज में दिलचस्पी लेता है, उसमें वह महारत हासिल करके ही छोड़ता है, शतरंज भी उसी सूची में शामिल होने लगा है। वह पहले से ही शतरंज पर दो किताबें पढ़ चुके हैं, एक प्रसिद्ध शतरंज खिलाड़ी आरोन निमजौच द्वारा लिखी गई पुस्तक माई सिस्टम है और दूसरी किताब हरमन ग्रुटेन द्वारा लिखी गई चेस स्ट्रैटेजी फॉर क्लब प्लेयर्स।

चारमीनार को पकड़े हुए फेलुदा ने कहा, ''जानते हो तॉपसे, सभी खेलों की तरह शतरंज में बचाव उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि आक्रमण। यदि गैरी कास्पारोव अब तक के सर्वश्रेष्ठ शतरंज खिलाड़ी हैं तो टिग्रान पेट्रोसियन शतरंज के इतिहास में सर्वश्रेष्ठ रक्षक हैं लेकिन उन्हें इसके लिए कोई प्रसिद्धि नहीं मिली बल्कि उन्हें बोरिंग, डरपोक जैसे नामों से पुकारा गया। इस बात से कोई इंकार नहीं है कि उन्होंने शतरंज में एक नया रास्ता दिखाया और वे अपने आप में विश्व चैंपियन भी है, उनकी शैली की तुलना इतालवी फुटबॉल के दिग्गज कैतेनेचियो सिस्टम से की जाती है, जहाँ बचाव को सुदृढ़ किया जाता है, प्रतिद्वंद्वी के हमले को कुंद कर दिया जाता है। जब प्रतिद्वंदी नाराज हो जाता है और फिर थोड़ी सी गलती करता है तो जवाबी हमले किए जाते हैं।''

बातचीत के बाद फेलुदा ने जैसे ही अखबार पर नजर डाला वैसे ही व्हाट्सएप पर लाल मोहन बाबू का वीडियो कॉल आया। कोरोना महामारी के चलते लाल मोहन बाबू का हमारे घर आना बंद हो गया है, बेचारे गढ़पार के घर में कैद हो गए इसलिए उन्होंने वीडियो कॉल के जरिए दूध के स्वाद को घोल में संतुष्ट करने की कोशिश की। इस गर्मी में वह हमारे साथ लद्दाख जाने की योजना बना रहा था और पूजा–वार्षिकी में लद्दाख की पृष्ठभूमि पर एक लेख लिखने की योजना बना रहे थे। इस लेख का नाम उन्होंने सोचा था लद्दाख में लंकाकांड लेकिन फेलुदा ने यह कहते हुए नाम को ख़ारिज कर दिया कि लंका से लद्दाख बिल्कुल भी मेल नहीं खाता है बल्कि इसका नाम लद्दाख में लूटपाट रखा जा सकता है। जब फेलुदा ने फोन उठाया तो उस तरफ से लाल मोहन बाबू ने कहा, ''फेलुबाबू क्या कर रहे हैं?'' इससे पहले कि फेलुदा जवाब दे पाता, वह कहता रहा, ''क्या तुमने मेरा व्हाट्सएप स्टेटस देखा है?'' मैंने अपना मोबाइल फोन निकाला और देखा कि लाल मोहन बाबू ने एक स्पेनिश आमलेट बनाया था और बहुत सावधानी से उसकी एक तस्वीर ली और उसे अपने स्टेटस में डाल दिया। तस्वीर देखने के बाद फेलुदा ने उसने कहा, ''बहुत अच्छा बनाया है!''

रहस्य उपन्यासकार लालमोहन गांगुली उर्फ जटायु लॉकडाउन के दौरान खाना पकाने के शौकीन हो गए हैं। आज तक वे देशी पुलाव, चिकन, मटन घुघली, फीश फ्राई से काम चला रहे थे लेकिन आज तो वे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ही पहुंच गए। फेलुदा और मैंने कुछ देर पहले नाश्ते में उबले चने, मुरी (मुरमुरा) दाल और रेड टी लिया था। रविवार की सुबह हिंग के कचुरी (कचौरी) और अलुरदम (दमआलू) के स्थान पर ये सब खाना पड़ा क्योंकि लॉकडाउन से कुछ दिन पहले श्रीनाथ घर चले गए, उनकी पत्नी बीमार थी और लॉकडाउन की घोषणा के बाद वे लौट नहीं सके जिससे हम रसातल में गिर गए हैं। खाना पकाने के संबंध में फेलुदा कहते हैं, ''इस मामले में फेलू मित्तिर भी फेल है रे तॉपसे। उसके ऊपर घर साफ करना,

कपड़े धोने से हालत खराब हो गए हैं।" फेलुदा कहते हैं कि सहज रूप से जिन कार्यों को हम आसान मानते हैं, परिस्थिति ने हमें उनकी अहमियत समझा दी है। लाल मोहन बाबू ने कहा "देखो कितना अच्छा बना है! स्पेनिश ऑमलेट या एसपॉनिओले, टोरटिला डे पोटाटोज। आपको और तॉपसे को भी खिलाने का मन था लेकिन क्या करें!"

फेलुदा ने कहा, ''ठीक है, वह बाद में हो सकता है लेकिन अब से आप उच्चारण सुधार लिजिए, यह टोरतिया दे पाताातास है।'' लाल मोहन बाबू निराश होकर बोले कि यह तो मुझसे बोला भी नहीं जाएगा।

फेलुदा ने बिना उत्तर दिए मेरी ओर देखा और कहा, ''जानते हो तॉपसे, इस बारे में कई कहानियाँ हैं कि यह टोरतिया दे पाताातास कैसे आया। सबसे प्रसिद्ध यह है कि वर्ष 1835 के आसपास, जब स्पेन में गृहयुद्ध उग्र स्थिति में था, स्पेनिश कार्लिस्ट सेना ने स्वाधीन बास्के देश में आक्रमण किया। एक दिन थके और भूखे कार्लिस्ट जनरल थॉमस डी जुमालासीयारेहुई ने एक अनजान गाँव में बहुत ही साधारण घर में शरण ली। घर की महिला ने उसे टोरतिया खाने को दी, टोरतिया तो तुम जानते ही हो तॉपसे, जिसे स्पेनिश रोटी कहते हैं। हालांकि, जनरल ने खाया और महसूस किया कि यह अंडे से बना है और बहुत स्वादिष्ट है। उन्होंने उस टोरतिया की रेसिपी सीखी और अपने सैनिकों को खिलाना शुरू कर दिया क्योंकि इसे जल्दी बनाना बहुत आसान था और स्वाद भी लाजवाब था इसलिए यह रातों–रात हिट हो गया। जनरल थॉमस डी जुमालासीयारेहुई, स्पेनिश आमलेट के आविष्कारक के रूप में प्रसिद्ध हुए लेकिन कोई भी उस ग्रामीण महिला का नाम नहीं जानता था।'' लाल मोहन बाबू लगभग किनारे से कूद पड़े और कहा, ''अरिब्बा, यह फिल्म की कहानी है।''

फोन छोड़कर फेलुदा ने चाय का एक और दौर बनाया और ले आए। फोन फिर बड़े जोश के साथ बजा। फेलुदा को फोन पर बात करना इतना पसंद नहीं था इसलिए उसने नाराज होकर फोन उठाया। फेलुदा के मोबाइल की स्क्रीन को देखकर मुझे समझ में आया कि फेलुदा के नाराजगी का कारण क्या है। ट्रूकॉलर में दिख रहा एक अनजान नंबर एम मेघराज, मुंबई, महाराष्ट्र। अत्यंत दिलचस्प! फेलुदा ने कॉल रिसीव किया और नमस्ते कहा।

सामने से जानी–पहचानी आवाज थी "नमस्ते मिस्टर मीटर, कैसे हैं? क्या आप हमें पहचान पाए" जवाब में फेलुदा ने कहा "हाँ बिल्कुल, मैं अच्छा हूँ। आपने अचानक इस वक्त फोन क्यों किया वो बताइए।"

मगनलाल ने शांत स्वर में कहा, ''मित्तिर बाबू, आप मुझे दुश्मन समझते हैं, मैं आपके जीवन में प्रोफेसर मोरियाती की तरह हूँ लेकिन मैं हमेशा आपको अपना दोस्त मानता हूँ इसलिए मैंने इस कठिन समय में आपकी खबर लेने के लिए फोन किया। अपना ध्यान रखिए।'' अब फेलुदा ने मजाकिया लहजे में कहा "जरूरत पड़ने पर आप फिर इस दोस्त को मारने के लिए लोगों को भेजेंगे? कोलकाता हो या काठमांडू या बनारस हो? कहीं भी पीछा नहीं छोड़ा" मगनलाल ने कहा ''यह गलत है, तुम मेरे पीछे आए हो, तुमने मेरा धंधा बर्बाद कर दिया है। अतीत में जो हुआ उसे भूल जाइए। विश्वास किजिए अब मैं पूरी तरह से बदल गया हूँ और इसका श्रेय आपको देता हूं। जब तुमने मुझे पिंक पर्ल के मामले में पुलिस के हवाले कर दिया था तो मैंने फैसला किया कि अब बहुत हो गया, उम्र भी हो गई, मैं अब तस्करी और जालसाजी छोड़ दूँगा। आई एम रियली ग्रेटफूल टू यू मिस्टर मीटर और तॉपसे भाई को भी मेरी तरफ से शुभकामनाएं देना। लाल मोहन बाबू को भी कहना मैंने उन्हें जो तकलीफ दी है उसके लिए भी मुझे खेद है।" फेलुदा ने इसे पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया और पूछा, "अचानक मुंबई में क्या काम आ गया?"

बिल्कुल भी आश्चर्यचकित हुए बिना मगनलाल ने कहा, ''मैं आपको यही बताने जा रहा था। जेल से छूटने के बाद मैंने एक फिल्म निर्माण कंपनी खोलने का फैसला किया इसलिए मैं मुंबई आ गया, लेकिन आप जानते हैं मिस्टर मित्तिर, बाजार में मेरा नाम बहुत बदनाम है इसलिए इस काम में कोई फायदा नहीं हुआ। फिर आई कोरोना महामारी, मुंबई में सबसे बुरा हाल इसलिए मैंने फेस मास्क और सैनिटाइजर का नया व्यवसाय शुरू किया। झूठ नहीं बोलूंगा मिस्टर मित्तिर अच्छा मुनाफा कमा रहा हूँ।" फेलुदा कुछ कहने ही वाले थे लेकिन मगनलाल मेघराज कहते रहे ''अरे हम कलकत्ता में भी सप्लाई करते हैं, जरूरत पड़ने पर एक बार फोन कर लेना तो लोग आपके घर तुरंत आ जाएंगे। आपके लिए लागत दर पर, मैं एक पैसा भी अतिरिक्त नहीं लूंगा और अपने चाचा से कहना उस सैनिटाइजर में जहर नहीं है!"

ये सब वाक्या मिस्टर मित्तिर ने लाल मोहन बाबू से साझा की। मगनलाल के बारे में इतना सब जानने के बाद जटायु ने अपने चिर–परिचित अंदाज में कहा, ''हाइली सस्पीशियस!''

प्रधान कार्यालय शिकायत कक्ष

अत्याचार और अनाचार को सिर झुकाकर वे ही सहन करते हैं जिनमें नैतिकता व चरित्र का अभाव होता है। – कमलापति त्रिपाठी

संदीप दशरथ उनावणे

वैश्विक तापन और ग्रीनहाउस प्रभाव

हम सब आसपास, अखबार में, टेलीविजन पर बार–बार यह सुनते और देखते हैं कि ग्लोबल वार्मिंग (वैश्विक तापन) हो रहा है, लेकिन यह ग्लोबल वार्मिंग दरअसल है क्या, यह हम इस लेख में समझेंगे। ग्लोबल वार्मिंग का सबसे आसान उदाहरण है कि धूप में एक कार का शीशा बंद करके खड़ी कर देना, जैसे कार के अंदर तापमान बढ़ जाता है वैसे ही हमारी पृथ्वी पर भी तापमान बढ़ रहा है। पृथ्वी पर आने वाली सूरज की किरणें लघु तरंग यानि शॉर्ट वेव लेंथ के रूप में आती है और पृथ्वी पर आकर वही सूरज की किरणें बड़ी तरंग यानि लॉग वेव लेंथ के रूप में परिवर्तित हो जाती हैं। यह जो सृष्टि का नियम है यह ऐसा ही चलता आ रहा है। जैसे कार पर धूप पड़ने से कार के अंदर लगे शीशे धूप को बाहर जाने से रोकते हैं और कार का तापमान बढ़ जाता है वैसे ही पृथ्वी के आसपास जो वायु का आवरण है वह धूप को वापस जाने से रोकता है, इसी कारण पृथ्वी पर तापमान बढ़ जाता है। यही नियम एग्रीकल्चर – ग्रीन हाउस टेक्नोलॉजी में इस्तेमाल किया जाता है।

अब आप यह सोच रहे होंगे कि यह तो स्वाभाविक है, फिर इस पर इतनी चर्चा अब क्यूँ? यह जो ग्रीन हाउस इफैक्ट है जब यह स्वाभाविक होता है तो हमारी पृथ्वी और वातावरण समान (बैलेंस्ड) रहता है परंतु मानवीय गतिविधियों के कारण यह जो वायु का चक्र है वह असमान हो गया है, जब यह स्वाभाविक चक्र में होता है तब उसमें कार्बन डाइऑक्साइड, मिथेन वायु होते हैं और वह चक्र को समान रखते हैं परंतु जो मानवनिर्मित तरीके से अनेक वायु तैयार होते हैं जैसे क्लोरो फ्लोरो कार्बन, नाइट्रस ऑक्साइड, फ्लोरिनेटेड वायु आदि के कारण ग्रीन हाउस का चक्र असमान हो जाता है और इसी के परिणामस्वरूप हमारे पृथ्वी का तापन होता है। यह जो मानवनिर्मित वायु है यह मोटरकार, ईंधन, कारखाने, प्लास्टिक फोम्स के कारण बढ़ गए हैं और इस वायु की कार्यक्षमता स्वाभाविक वायु के तुलना में बहुत ज्यादा और दीर्घ समय तक होती है, यही कारण है कि हम सब इस पर इतना ध्यान दे रहे हैं।

ग्रीन हाउस परिणाम सर्वप्रथम जोशेफ फुरियर ने सन् 1927 में खोज की थी। पृथ्वी पर स्वाभाविक जो ग्रीन हाउस परिणाम है वह हमारे लिए बहुत जरूरी है लेकिन मानव हस्तक्षेप के कारण जो मानवनिर्मित ग्रीन हाउस परिणाम हो रहा है वह हमारे लिए हानिकारक है। ग्रीन हाउस प्रभाव और वैश्विक तापन कैसे और क्यों होता है यह हमने जान लिया अब इसके क्या परिणाम होते हैं यह जान लेते हैं। यह परिणाम सभी जगह हो सकते हैं जैसे जमीन, हवा और पानी। वैश्विक तापन के कारण जो उपजाऊ जमीन है वह रेगिस्तान में परिवर्तित हो सकती है, जो हवा है वह इतनी शुष्क और गरम हो सकती है कि उसमें जीवित रहना बहुत मुश्किल साबित होगा और जो पानी है वह लगातार बर्फ पिघलने के कारण उसका स्तर इतना बढ़ जाएगा और जमीन का बहुत सा हिस्सा पानी में समा जाएगा। इससे जो अकाल पड़ता है उसकी तीव्रता बहुत अधिक बढ़ जाएगी।

इसीलिए हमारी पूरी मानव जाति का यह कर्तव्य बनता है कि उपरोक्त संबंधित आने वाली चुनौतियों को पहचानते हुए हम सब कुछ अच्छे कदम उठाएं और हमारी पृथ्वी को सुजलाम सुफलाम बनाएं।

शाखा–काहनुवान
अंचल कार्यालय गुरदासपुर

राजभाषा अंकुर के जून – 2021 का विमोचन

रचनाकारों से निवेदन

रचनाकारों से निवेदन है कि बैंक के प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित की जा रही तिमाही हिंदी गृह–पत्रिका "राजभाषा अंकुर" में प्रकाशन हेतु लेख भेजते समय लेख के अंत में अपना नाम, शाखा/कार्यालय का नाम व पता, मोबाइल नंबर तथा अपना बैंक खाता संख्या आईएफएससी कोड सहित अवश्य लिखें। इसके साथ ही लेख के संबंध में मौलिकता प्रमाण–पत्र और अपना फोटो भी उपलब्ध कराएं। सेवानिवृत्त स्टाफ सदस्य उपरोक्त के अतिरिक्त अपने घर का पता तथा स्थायी खाता संख्या (पैन नंबर) का भी उल्लेख करें।

मुख्य संपादक

स्वतंत्रता दिवस समारोह-2021

स्टाफ प्रशिक्षण महाविद्यालय रोहिणी, नई दिल्ली

ੴ ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫ਼ਤਹਿ

पंजाब एण्ड सिंध बैंक

(भारत सरकार का उपक्रम)

जहाँ सेवा ही जीवन - ध्येय है

कंपनियों / शासकीय कर्मचारियों के लिए पीएसबी वेतन प्लस खाता

पीएसबी उड़ान वेतन प्लस

पीएसबी वेतन प्लस खाता

जीवन सुरक्षा तथा सर्वव्यापी बचत के लिए विशेष सुविधायुक्त खाता

पीएसबी - उड़ान

- ओवरड्राफ्ट सुविधा – 2 माह का निवल वेतन
- ₹ 20 लाख का वैयक्तिक आकस्मिक मृत्यु बीमा कवर / स्थाई पूर्ण निःशक्तता बीमा कवर
- डेबिट कार्ड के वार्षिक प्रभार में छूट
- लॉकर किराए में 25% रियायत
- एसएमएस अलर्ट प्रभार मे छूट

पीएसबी अपना घर – सहज

- आवश्यकतानुसार ऋण
- ब्याज दर – 6.65% से प्रारंभ
- 30 वर्षों तक दीर्घकालीन चुकौती
- शून्य प्रसंस्करण प्रभार व पूर्व भुगतान प्रभार
- लॉकर किराए में 50% रियायत

ईएमआई प्रति लाख ₹642/-

1800 419 8300 (टोल फ्री)

@PSBIndOfficial पर हमें फॉलो करें।